* वर्ष 45 * अंक 5 * मई 2018

हंसती दुनिया

₹15/-

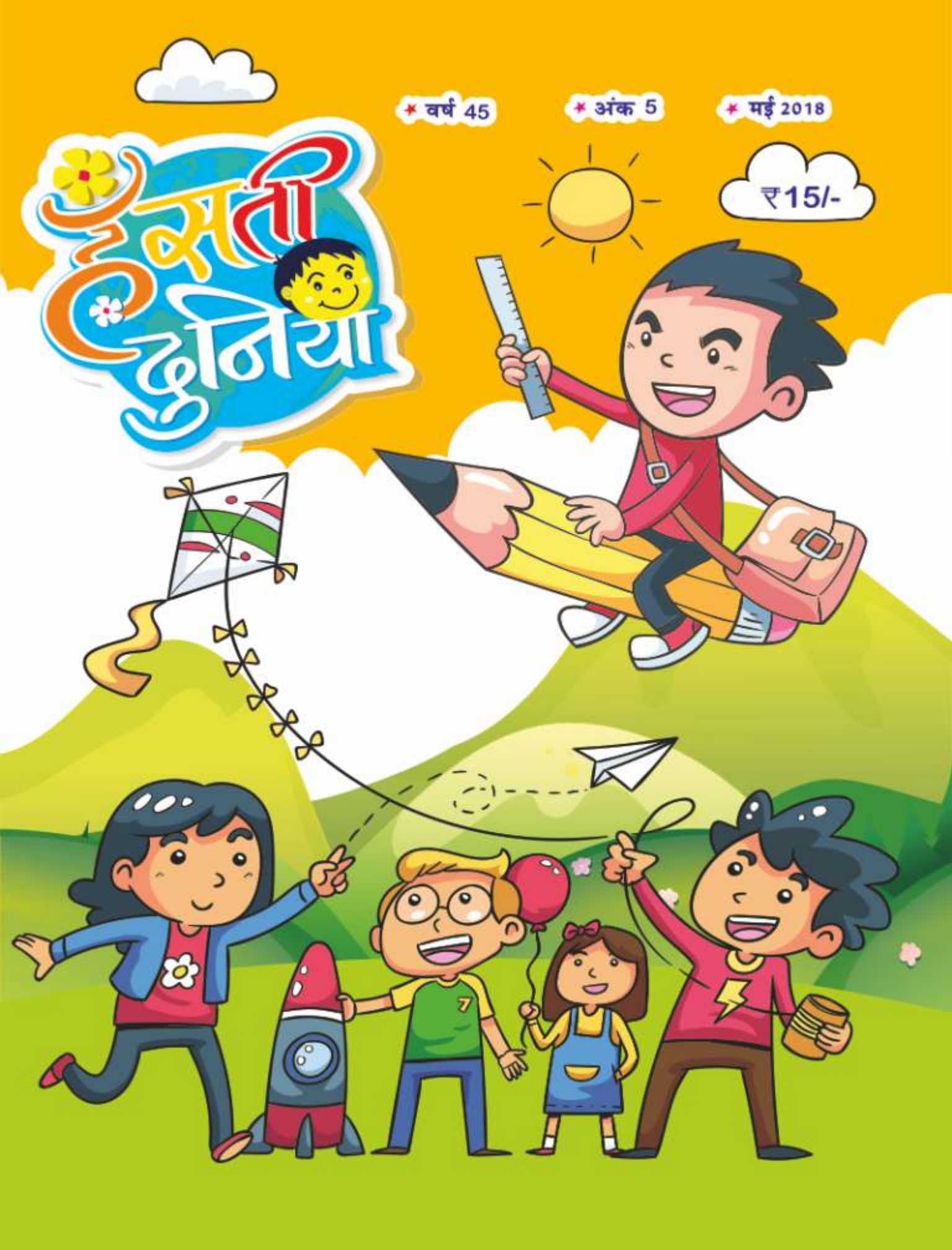

हँसती दुनिया

• वर्ष 45 • अंक 5 • मई 2018 • पृष्ठ 52
बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका
(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

सी. एल. गुलाटी, प्रभारी पत्रिका विभाग

मुख्य सम्पादक : हरजीत निषाद

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org

प्रकाशक एवं मुद्रक राधेश्याम ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9 हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II, नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

Subscription Value

	India/ Nepal	UK	Europe	USA	Canada/ Australia
Annual	Rs.150	£15	€ 20	$25	$30
5 Years	Rs.700	£70	€ 95	$120	$140

Other Countries :
Equivalent to U·S· Dollars as mentioned above.

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
20. वर्ग पहेली
44. पढो और हँसो
46. कभी न भूलो
49. रंग भरो
50. आपके पत्र

चित्रकथाएं

12. दादा जी
34. किट्टी

विशेष/लेख

6. माँ : एक मानव संसाधन ...
: सुकर्मपाल गिरि
7. बाबा हरदेव सिंह जी के दिव्य वचन
8. सन्त निरंकारी आध्यात्मिक स्थल समालखा का विकास कार्य
: सी. एल. गुलाटी
16. कैसे बना बॉल प्वाइंट पेन
: किरणबाला
22. दैत्याकार गिलहरी
: डॉ. परशुराम शुक्ल
28. क्या है पवन चक्कियां
: डॉ. विनोद गुप्ता
30. विज्ञान प्रश्नोत्तरी
: घमण्डीलाल अग्रवाल
33. पेंगोलिन
: विद्या प्रकाश
38. प्रकाश पैदा करने वाले जीव
: किरणबाला
40. हवासील
: गुलाम मोहम्मद
42. रिमोरा, पायलेट फिश, समुद्री खीरा
: पुष्पेश कुमार

कविताएं

11. गर्मी के दिन ..., गर्मी आई
: महेन्द्र सिंह शेखावत
21. गौरैया
: हरप्रसाद रोशन
21. पेड़
: दिनेश दर्पण
29. मटके का पानी
: कमलसिंह चौहान
29. लो आ गई गर्मी
: उमेश चन्द्र सिरसवारी
39. मत रूठो मुन्ने
: घमण्डीलाल अग्रवाल
47. अनमोल हैं बच्चे
: कमल सिंह चौहान
47. टमटम
: राधेलाल 'नवचक्र'
50. माँ
: जगतार 'चमन'

कहानियां

6. माँ की आज्ञा सर्वोपरि
: श्यामसुन्दर 'सुमन'
9. प्रिय भक्त
: राघव दास निरंकारी
17. जन्मदिन का उपहार
: राजकुमार जैन 'राजन'
25. भविष्यवाणी
: दीपांशु जैन
31. समय और सत्य
: राधेलाल 'नवचक्र'
41. यूं तोला गया धुआं
: राजकुमार
43. राजा फैसला
: नरेश कुमार बंका

सबसे पहले

उचित अर्थ दें

आज नैतिक शिक्षा का पीरियड है। शिक्षक महोदय के हाथ में एक सफेद रंग का पेपर है। कक्षा में प्रवेश करते ही उन्होंने उस खाली पेपर को 'ब्लैक बोर्ड' पर टांग दिया। सभी छात्र उत्सुकता से देखने लगे कि अध्यापक जी इस पर क्या लिखते हैं? अरे, यह क्या? 'सर' ने तो इस पेपर पर एक गोल घेरा यानि सर्कल बना दिया। फिर शिक्षक ने सबसे बारी-बारी पूछा कि यह क्या है? लगभग सभी ने एक-सा जवाब दिया कि यह वृताकार, गोल घेरा, सर्कल और चक्र इत्यादि है और एक विद्यार्थी ने उसे संसार का चक्र भी बताया।

शिक्षक महोदय ने फिर उस गोल आकृति में दो भौहें बना दी और उन दोनों के बीच में नीचे एक नाक की आकृति भी बना दी।

अब सभी विद्यार्थी बोलने लगे कि यह तो किसी व्यक्ति का चित्र बन रहा है। अचानक शिक्षक ने चित्र बनाना स्थगित कर दिया और कहा कि आप बताएं कि यह किसका चित्र है?

बारी-बारी से अनेक विद्यार्थियों ने कहा– यह किसी पुरुष का चित्र बनता दिखाई दे रहा है तो कुछ ने कहा कि यह किसी महिला का चित्र हो सकता है। किसी ने उसको किसी नेता अथवा धार्मिक व्यक्ति का चित्र भी बताया।

अध्यापक जी ने सबको सुनने के बाद कहा– सर्वप्रथम तो यह चित्र अधूरा है। अभी यह पूरा नहीं है तो अधूरे चित्र से केवल अनुमान ही लगाया जा सकता है कि अमुक चित्र किस का हो सकता है। यह पूर्ण विश्वास से नहीं कहा जा सकता।

इस चित्र में भौहें तो हैं परन्तु आंखें नहीं बनी हैं। आंखों के बिना कोई देख नहीं सकता है। एक बात और जो वस्तु है ही नहीं उसे आंखें भी नहीं देख सकती। इस चित्र में मुंह भी नहीं बना हुआ। मुंह को दर्शाने के लिए होठों का प्रयोग करना पड़ता है। वह भी इस चित्र में नहीं है। अगर इस चित्र में होठ होते तो इस चित्र की बनावट में सजीवता दिखाई पड़ती। इस चित्र में अभी कान भी नहीं बनें। अगर कान भी बन जाते तो यह चित्र स्वयं में कुछ न कुछ अवश्य बन जाता।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि एक चेहरे में जो भी मौलिक आवश्यकता या पूरे अंग हों तो वह एक व्यक्ति का चित्र है।

हम सबकी आंखें भी हैं, कान भी हैं और होठ भी परन्तु किसी-किसी के आंखें होने पर भी उसे दिखाई नहीं पड़ता क्योंकि उसकी आंखों में रोशनी नहीं होती। उसको दृष्टिहीन कहा जाता है। जिसके कान तो हैं परन्तु उसे सुनाई न दे तो उसे बहरा और जिसका मुंह, होठ भी हो और वह बोल न सके तो उसे गूंगा कहा जाता है।

मेरे आंखें भी हैं और उनमें देखने की क्षमता भी है, तो क्या मैं वही कुछ देख रहा हूँ जो मेरी आंखों को दिखाई दे रहा है या जो मैं देखना चाहता हूँ, केवल उसे ही देख रहा हूँ। मैं केवल अपने ही दृष्टिकोण से हर वस्तु को देखता हूँ। अगर मैं केवल अपनी धारणा और अपनी सोच से ही हर किसी को देखकर निर्णय लेता हूँ तो मेरी भी हालत उस चित्र की तरह है जिसमें भौहें तो हैं परन्तु आंखें नहीं।

इसी प्रकार अगर मैं किसी भी बात को सुनकर अपना ही अर्थ देता हूँ और बिना तथ्य जाने दूसरे की आलोचना या प्रताड़ना कर देता हूँ तो कान होते हुए भी बहरा हूँ और अगर किसी को सत्य के लिए जूझता हुआ देख कर चुप रह जाता हूँ तो यह मेरा गूंगा हो जाना ही है।

प्यारे साथियों! हमें भी इन आंखों, कानों और मुंह का उचित प्रयोग करना है। पहले दूसरे व्यक्ति की पूरी बात सुनें, फिर उस बात को उसकी दृष्टि से ही देखें, फिर कोई वक्तव्य दें। इसी तरह अपने अन्दर झांकें, फिर अपनी अन्तरवाणी को सुनें और अपने को अपने ही शब्दों में समझाएं और अपने जीवन को उचित अर्थ दें।

– विमलेश आहूजा

हमारे पवित्र ग्रंथ : हरजीत निषाद

सम्पूर्ण अवतार बाणी !!!

पद संख्या : 167

काहनूं ग़ाफ़ल हो के सुत्तैं अक्खां मीटी हे इनसान।
जाग के अपणा कम मुका लै जिस लई आयैं विच जहान।
एह वेला फिर हत्थ न आउणा तूं पछतावेंगा अनजान।
इस दुनियां दे अन्दर बन्दे चार दिनां दा तूं महमान।
मानुष जनम अमोलक पाया इस दा मिलणा नहीं आसान।
मात गर्भ चों बाहर आ के भुल्ल गया एं तूं भगवान।
अपणे आप तों तूं नावाकिफ़ सत्गुर कोलों कर पहचान।
झल्या तेरा मालक केहड़ा जिसदे ने एह पिंड प्रान।
अग्गे जा के मुंह की देसें एनां ते तूं सोच विचार।
कहे अवतार एह तेरे हत्थ विच बाज़ी अपणी जित या हार।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि इन्सान के लिए जीवन-बाजी जीतना या हारना उसके ऊपर निर्भर है। महात्मा इन्सान को सावधान करते हैं कि इन्सान तू विचार कर कि तूने किसलिए अपनी आँखें बंद कर रखी हैं। क्यों तू असावधान होकर सोया हुआ है। तेरा इस तरह बेसुध होकर सोये रहना ठीक नहीं है। इन्सान तू उठ और जिस कार्य के लिए तू संसार में आया है सबसे पहले वह कार्य कर।

बाबा अवतार सिंह जी मानव को सचेत करते हुए बता रहे हैं कि इन्सान तू इस दुनिया में चार दिनों का मेहमान है। तू यहाँ सदा के लिए नहीं आया है। संसार से तुझे कभी भी जाना पड़ सकता है। कभी भी बुलावा आ सकता है और तुझे तत्क्षण इस दुनिया को छोड़कर जाना पड़ेगा। यह समय जो तेरे हाथ में है, यह समय जिससे तू अन्जान बना बैठा है यह वापस लौटकर आने वाला नहीं है। समय गुजर जाने के बाद तो केवल पछतावा ही तेरे हाथ लगेगा। यह जो अनमोल मानव-जन्म तुझे मिला है इस दुर्लभ जन्म को पाना आसान नहीं है। माँ के गर्भ में तू उस घोर कष्ट से बाहर आने की प्रार्थना करता रहा लेकिन बाहर आने के बाद जिस प्रभु ने तेरे ऊपर तरस खाकर कृपा की तू उस भगवान को ही भुला बैठा है।

बाबा अवतार सिंह जी स्पष्ट कर रहे हैं कि इन्सान अपने आप तू परमात्मा को नहीं जान सकता। समय रहते सद्गुरु के चरणों में अरदास कर इस प्रभु-परमात्मा की पहचान कर ले।

महात्मा कहते हैं कि मूर्ख इन्सान जिसने तुझे यह सुन्दर शरीर और प्राण दिये हैं उसके आगे तू उसे क्या मुँह दिखाएगा, तू इस पर गम्भीरता से सोच-विचार कर ले। यह कार्य करके तू जीवन-बाजी जीत सकता है और इसकी अनदेखी करके तू जीवन-बाजी हार भी सकता है इसलिए तेरे लिए इस पर भली-भांति विचार करके इस जीवन-बाजी को जीत लेना बहुत आवश्यक है। तू इसमें किसी प्रकार की लापरवाही मत कर।

बाल कहानी : श्यामसुन्दर 'सुमन'

माँ की आज्ञा सर्वोपरि

उस समय लॉर्ड कर्जन कोलकाता के गवर्नर थे और आशुतोष मुखर्जी हाईकोर्ट के सम्मानित तथा ईमानदार न्यायाधीश। लॉर्ड कर्जन मुखर्जी का बहुत सम्मान करते थे। उस समय किसी भारतीय अधिकारी को लंदन जाने का अवसर मिलता तो उसकी प्रतिष्ठा बढ़ जाती थी। मुखर्जी भी लंदन जाना चाहते थे लेकिन संकोची स्वभाव के कारण कभी यह इच्छा प्रकट नहीं करते थे। लेकिन मित्रों के बार-बार कहने पर उन्होंने लंदन जाने का मन बनाया। लॉर्ड कर्जन को जब इसका पता चला तो उन्होंने मुखर्जी से पहल करते हुए एक दिन कहा, 'मिस्टर मुखर्जी प्रसन्नता होगी कि इस बार लंदन जाने वालों की सूची में तुम्हारा नाम सबसे ऊपर होगा।'

मुखर्जी ने कहा– 'धन्यवाद, सर।'

मुखर्जी जब शाम को घर लौटे तो उन्होंने अपनी माँ को यह बात बतलाई। पहले तो माँ शान्त रही, फिर बोली– 'क्यों बेटा, मेरे पास रहने में तुमको दिक्कत हो रही है जो तुम मुझे अकेली छोड़कर लंदन जाना चाहते हो? कोई माँ अपने पुत्र को विदेश जाने की आज्ञा नहीं दे सकती। मैं तुम्हें विदेश नहीं जाने दूंगी।'

माँ की बात सुनकर मुखर्जी ने लंदन जाने का इरादा छोड़ दिया। दूसरे दिन वह सीधे लॉर्ड कर्जन के पास पहुँचे और कहा– 'सर! मैं लंदन नहीं जा सकता।'

लॉर्ड कर्जन चौंक कर बोले– 'आखिर क्यों? लंदन जाना तो भारतीय अपना गौरव समझते हैं।'

मुखर्जी ने कहा– 'आप ठीक कह रहे हैं, लेकिन मेरी माँ की इच्छा है। वह नहीं हो सकता।'

लॉर्ड कर्जन ने कहा– 'परन्तु तुम्हारी माँ की इच्छा तुम्हें नहीं रोक सकती, तुम्हें जाना ही होगा। अपनी माँ से जाकर कहो कि यह लार्ड कर्जन का आदेश है।'

मुखर्जी लॉर्ड कर्जन के रवैये से तिलमिला गए। उन्होंने अपनी जेब से एक कागज निकाला और उस पर कुछ लिखकर लॉर्ड को देते हुए कहा, 'यह रहा मेरा इस्तीफा।' इस्तीफे में लिखा था– 'मैं अपनी माँ की आज्ञा को आपके आदेश से ऊँचा मानता हूँ। अतः मेरा इस्तीफा स्वीकार करें।' लॉर्ड कर्जन ने मुखर्जी का इस्तीफा स्वीकार नहीं किया।

माँ : एक मानव संसाधन से परिपूर्ण जीवन

माँ को संसार में सर्वाधिक ऊँचा दर्जा प्राप्त है। माँ को सर्वाधिक सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। क्या कारण है? इसके लिए निम्न तथ्यों पर गौर करते है।

- माँ रातभर जागती है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि बच्चा अच्छी प्रकार से सो पाए अर्थात् बच्चे की नींद के लिए अपनी नींद का त्याग करती है।
- इससे पहले कि बच्चा नींद से जाग जाए फटाफट अपना कार्य निपटाती है ताकि बच्चे के जागने पर उसकी तरफ पूरा ध्यान दिया जा सके।
- अपना कार्य समय से पहले निपटाती है ताकि बच्चे को पूरा समय दे सके।
- उसे प्रथम शिक्षा भी देती है और फिर उसके आगे की सही दिशा/शिक्षा से आनन्दित होती है।
- बच्चे को कभी-कभी दण्ड भी देती है अर्थात् पिटाई भी करती है किन्तु बच्चे की भलाई के लिए और बच्चे की सफलता पर वह गर्व करती है।

इस प्रकार हम पाते हैं कि माँ का जीवन मानव संसाधन से परिपूर्ण है। यही कारण है कि माँ को संसार में सर्वाधिक सम्मानजनक स्थान प्राप्त है।

प्रस्तुति : सुकमपाल गिरि (दिल्ली)

बाबा हरदेव सिंह जी के दिव्य वचन

★ परमपिता परमात्मा को जानकर ही विश्व शान्ति सम्भव है। महापुरुषों, गुरुओं, अवतारों के पदचिन्हों पर चलकर ही कल्याण सम्भव है। मानवता को अध्यात्मिकता से ही बचाया जा सकता है।

★ प्रेम से युक्त होकर प्यार की दुनिया बसायें।

★ जीवन का हर पहलू खूबसूरत बनायें।

★ सच्ची जाग्रति तब होती है जब हम अपनी आत्मा का बोध प्राप्त करते हैं।

★ भक्त सद्गुरु से, सद्गुरु भक्त से प्रेम करते हैं।

★ जैसे शरीर को सजाने के लिए आभूषण पहने जाते हैं। ऐसे ही जीवन को सजाने के लिए प्रेम, नम्रता, सहजता, विशालता और सत्कार के आभूषण पहनने होंगे।

★ प्यार-नम्रता गुरसिख की निशानी है।

★ परमात्मा को जानकर ही आत्मा का कल्याण सम्भव है।

★ इन्सान प्रेम की भाषा सीख ले तो फिर वैर-नफरत का कोई भाव ही नहीं रहेगा।

★ हमने हमेशा प्यार को बढ़ाना है, नफरत को नहीं।

★ सेवा वह मीठा गुड़ है जिसका आनन्द खाने वाला ही ले सकता है।

★ मानव से नफरत करके प्रभु की पूजा नहीं की जा सकती।

★ महत्वपूर्ण होना अच्छा है लेकिन अच्छा होना ज्यादा महत्वपूर्ण है।

★ सोने की डली को अगर कीचड़ में फेंक दे तो उसका मूल्य कम नहीं होता अगर मिट्टी आसमान में उड़ जाये तो उसका मूल्य बढ़ नहीं जाता, उलटे आँखों में पड़ती है।

★ महापुरुष गुणों पर ही ध्यान देता है।

★ फूलों की तरह महक, खुशी और सुन्दरता देते जाएं।

★ महान कार्य करने के लिये पहली जरूरत है आत्मविश्वास।

★ विकसित हो रहा ज्ञान ही अच्छे लोगों का विचार है।

★ अगर प्रभु-प्रेमी कहलाना है तो प्यार की ठंडी फुहार बनना होगा। सच्चे प्रभु-प्रेमी वही कहलाते हैं जो प्रेम से भरपूर होते हैं।

★ निरंकार-प्रभु से जुड़कर ही युवा ऊर्जावान बनेंगे।

★ भक्त एक खिले फूल की भांति होता है और भक्ति उसकी महक है।

★ जब मन निर्मल हो गया तो जीवन भी निर्मल हो जायेगा।

– संग्रहकर्ता : रीटा (दिल्ली)

सन्त निरंकारी आध्यात्मिक स्थल समालखा का विकास कार्य

- सी.एल. गुलाटी, सचिव (मुख्यालय) दिल्ली

70वें वार्षिक सन्त समागम के अवसर पर जनरल बॉडी मीटिंग को सम्बोधित करते हुए सद्गुरु माता सविन्दर हरदेव जी ने फरमाया था कि बाबा हरदेव सिंह जी के सपनों को पूरा करने के लिये बहुत कुछ करना बाकी है, जैसे कि समालखा (हरियाणा) में कई वर्ष से जमीन ली हुई है और अनेकों महापुरुष पूछते भी हैं कि अपनी ज़मीन पर समागम कब होगा। अब यह महसूस हो रहा है कि यहाँ पर (दिल्ली में) जगह काफी छोटी पड़ रही है और आशा है समागम के बाद समालखा वाला समागम स्थल का प्रोजेक्ट भी जल्दी ही शुरु हो जायेगा। बाबा जी के सपनों के अनुसार इन सब कामों को पूरा करने के लिये आप सब का मिला-जुला योगदान जरूरी है क्योंकि ये सब तभी हो पायेगा जब आप सब अपना पूर्ण योगदान इसमें दे पायेंगे। इस मीटिंग में केन्द्रीय योजना व सलाहकार बोर्ड, कार्यकारिणी समिति, सन्त निरंकारी चैरिटेबल फाउंडेशन, केन्द्रीय सेवादल अधिकारी, जोनल इंचार्ज, सेवादल के क्षेत्रीय संचालक तथा देश भर के संयोजकों सहित दूर-देशों से आये प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया था और सभी सद्गुरु के आशीर्वचनों से अत्यन्त उत्साहित थे।

सद्गुरु माता जी की पावन उपस्थिति में 6 दिसम्बर, 2017 को सन्त निरंकारी आध्यात्मिक स्थल समालखा के त्वरित विकास पर आगे विचार विमर्श हुआ और निर्माण योजनाओं को मूर्त रूप देने का कार्य आगे बढ़ा। निर्माण कार्य में विशेष योग्यता रखने वाले लोगों को कार्य सौंपने तथा माया के प्रावधान की भी रूप रेखाएं निर्धारित हुईं।

इस कार्य में और गति तब आई जब 14 जनवरी, 2018 को समालखा ग्राउंड में भक्ति पर्व समागम के अवसर पर सद्गुरु माता जी ने समागम परिसर निर्माण की सेवाओं का अपने कर कमलों से शुभारम्भ किया।

इस आध्यात्मिक स्थल को वार्षिक निरंकारी सन्त समागम हेतु आवश्यक समस्त सुविधाओं से युक्त बनाया जाना है जिसमें विशाल सत्संग पण्डाल, प्रदर्शनी स्थल, सरोवर, म्यूज़ियम, पत्रिका-प्रकाशन स्थल, प्रबंधकीय खण्ड, कैन्टीन, लंगर, शौचालय आदि की व्यवस्था होगी। विद्युत वितरण खण्ड तथा सौर ऊर्जा खण्ड भी इसमें स्थित होंगें। सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद से निर्माण कार्यों को पर्याप्त गति मिली है। 31 अगस्त, 2018 तक विशाल मुख्य सत्संग पंडाल का निर्माण पूर्ण किया जाना प्रस्तावित है।

हम सभी जानते हैं कि सन्त समागम की व्यवस्था कितनी विशाल होती है। इतनी विशाल व्यवस्थाओं एवं निर्माण कार्यों को पूर्ण करने हेतु निश्चित रूप से सबके सहयोग, सबके योगदान की आवश्यकता होगी।

सद्गुरु माता जी के पावन चरणों में अरदास है कि जैसा बाबा हरदेव सिंह जी महाराज ने चाहा था उसी अनुरूप यह विशाल योजना मूर्त रूप ले पाये और समालखा आध्यात्मिक स्थल ज्ञान के प्रकाश को विश्व भर में फैलाने के लिए एक लैण्डमार्क के रूप में संसार के सामने आए।

समालखा में विशाल सत्संग पण्डाल का प्रस्तावित मॉडल

लघु कहानी :
राघव दास निरंकारी

प्रिय भक्त

एक बार नारद मुनि को घमण्ड हो गया कि वे जितने निःस्वार्थ भाव से भगवान विष्णु की भक्ति करते हैं, उतना शायद ही अन्य कोई करता होगा। अन्य लोगों का उद्देश्य तो इच्छित वस्तु को प्राप्त करना होता है।

विष्णु जी ने नारद के मन की बात भांप ली और वे नारद से बोले– मेरा एक प्रिय भक्त अमुक स्थान पर रहता है। यदि तुम उससे मिलो तो तुम्हारा उससे परिचय हो जायेगा।

नारद जी जब निर्दिष्ट स्थान पर गये तो वहाँ उन्हें एक किसान दिखाई दिया। वे उससे मिले और उसके पूरे दिन के कार्यक्रम का अवलोकन करने लगे। नारद ने देखा कि उस किसान ने हरि नाम लिया और वह हल लेकर खेत में अपने कार्य में जुट गया। वह दिनभर काम करता रहा और रात्रि को सोने से पूर्व एक बार फिर हरि का नाम लेकर सो गया। यह देख नारद सोचने लगे– इस गंवार किसान ने दिन में केवल दो बार भगवान का नाम लिया और प्रभु कहते हैं कि यह मेरा प्रिय भक्त है। यह तो मुझे सांसारिक कर्मों में ही लिप्त दिखाई दिया।

नारद जी तुरन्त विष्णु जी के पास गये और उन्होंने उस किसान के बारे में अपने विचार व्यक्त किये।

इस पर विष्णु जी बोले– नारद! अच्छा हुआ तुम आ गये, मेरा एक काम है। तुम तेल भरे इस कटोरे को लेकर नगर में चारों ओर घूमकर ज्यों का त्यों ले आओ। ध्यान रहे, इसकी एक बूंद भी धरती पर गिरने ना पाये।

नारद जी जब लौटकर आये तब विष्णु जी ने पूछा– नारद, जरा बतलाओ तो तुम जब नगर परिक्रमा कर रहे थे तब तुमने कितनी बार मेरा स्मरण किया था?

एक बार भी नहीं– नारद जी ने उत्तर दिया। क्योंकि मेरा सारा ध्यान तेल के कटोरे की ओर लगा हुआ था।

इस पर भगवान विष्णु जी बोले– देखो, तेल भरे एक कटोरे ने तुम्हें मुझसे विमुख कर दिया। जबकि यह किसान अपने परिवार का भरण-पोषण करते हुए भी नियमित रूप से स्मरण करता है। क्या वह मेरा प्रिय भक्त नहीं हुआ?

यह सुनकर नारद लज्जित हो गये।

–यह सत्य है कि जिसके हृदय में प्रभु विराजते हैं वही सच्चा भक्त है।

दो बाल कविताएं :
महेन्द्र सिंह शेखावत 'उत्साही'

गर्मी के दिन जब हैं आते

सूरज तेज अगन बन जलता,
गर्मी का हर दिन यूं तपता।

कूलर पंखें व्यर्थ हुए सब,
व्याकुल होता सबका मन अब।

कितना चाहे पानी पीना,
प्यास बुझे ना बहे पसीना।

ठंडी चीजें मन को भायें,
ठंडी समीर बहुत सुहाये।

मच्छर सबको बहुत सताते,
गर्मी के दिन जब हैं आते।

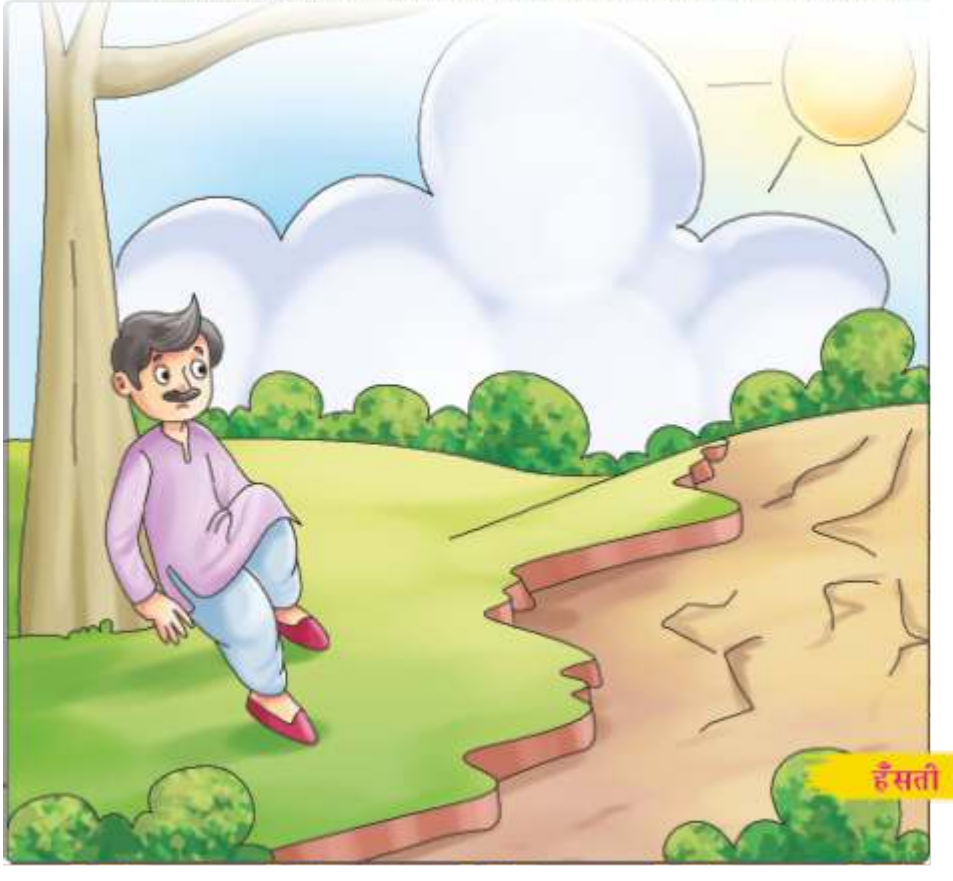

गर्मी आई

गर्मी आई, गर्मी आई,
एसी, कूलर, पंखें लाई।

धरती तपती अम्बर तपता,
पवन तपाती गर्मी आई।

पल-पल में अब बहे पसीना,
प्यास जगाती गर्मी आई।

सूख गये हैं ताल-तलैया,
नदी सुखाती गर्मी आई।

ठंडी छांव सभी खोजते,
पेड़ सुखाती गर्मी आई।

गर्मी से अब व्याकुल सारे,
रोब जमाती गर्मी आई।

दादाजी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

गाँव से भागकर एक बकरी जंगल में चली आई–

अरे! यहाँ तो बहुत अच्छी और हरी-हरी घास उगी हुई है। अगर मैं यहीं रूक जाऊँ तो भरपेट खाने को मिलेगा।

उसे याद आया कि गाँव में उसका मालिक उसे रूखी-सूखी घास ही खाने को देता था।

सारा दिन तो बकर-बकर खाती है और दूध देने के नाम पर बस लोटा-भर ही देती है।

दूध निकालने को तो हर समय तैयार रहता है और खाने को रूखा-सूखा देता है। कंजूस कहीं का।

जंगल में बकरी अब न सिर्फ आज़ाद थी बल्कि अपनी मर्जी की मालिक भी थी। वहाँ खाने की भी कमी न थी।

यह है मस्त जिन्दगी। जहाँ मर्जी घूमो। जितना मर्जी खाओ! ... गाँव में तो हर समय खूंटे से बंधा रहना पड़ता है।

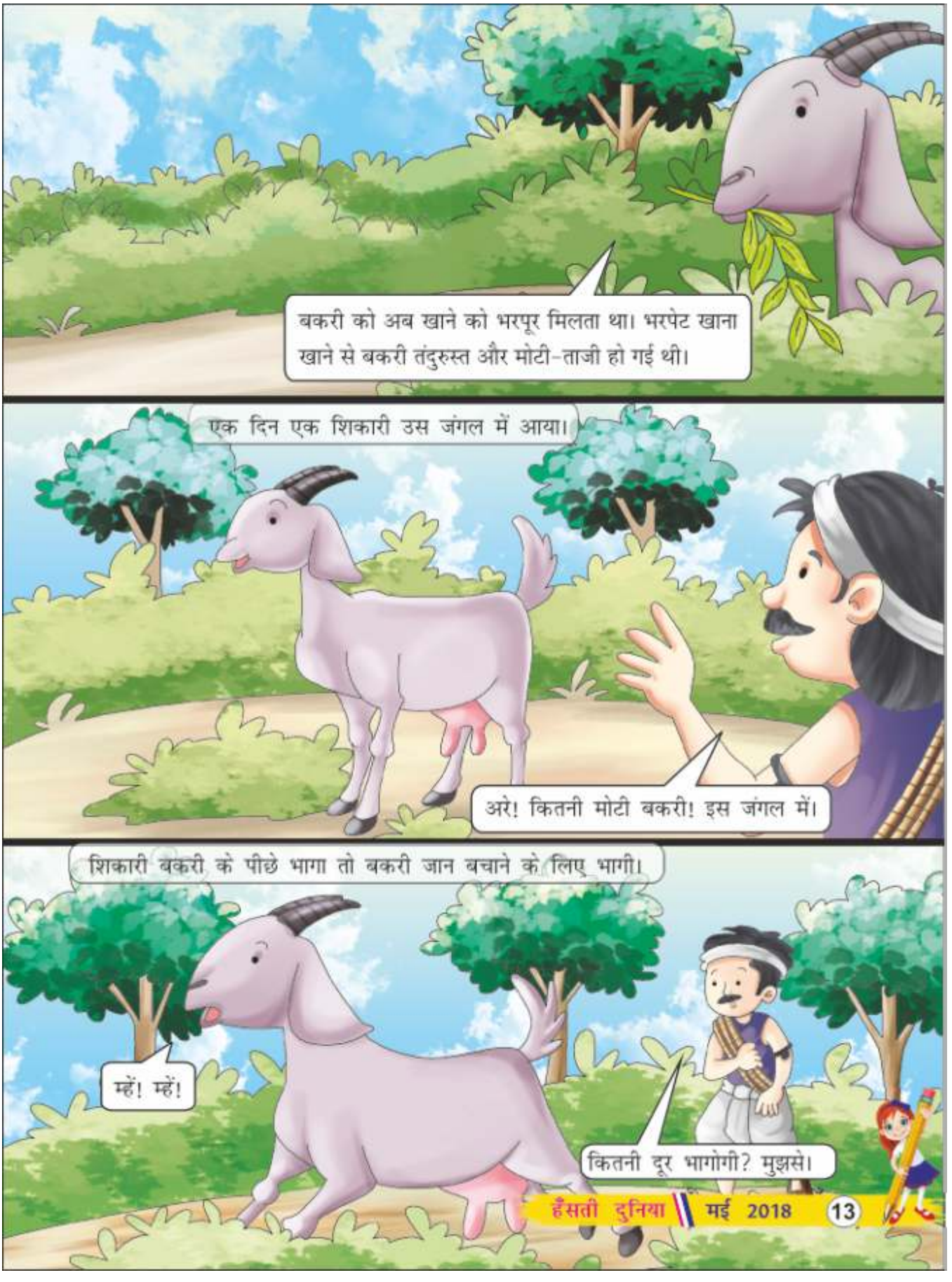
बकरी को अब खाने को भरपूर मिलता था। भरपेट खाना खाने से बकरी तंदुरुस्त और मोटी-ताजी हो गई थी।
एक दिन एक शिकारी उस जंगल में आया।
अरे! कितनी मोटी बकरी! इस जंगल में।
शिकारी बकरी के पीछे भागा तो बकरी जान बचाने के लिए भागी।
म्हें! म्हें!
कितनी दूर भागोगी? मुझसे।

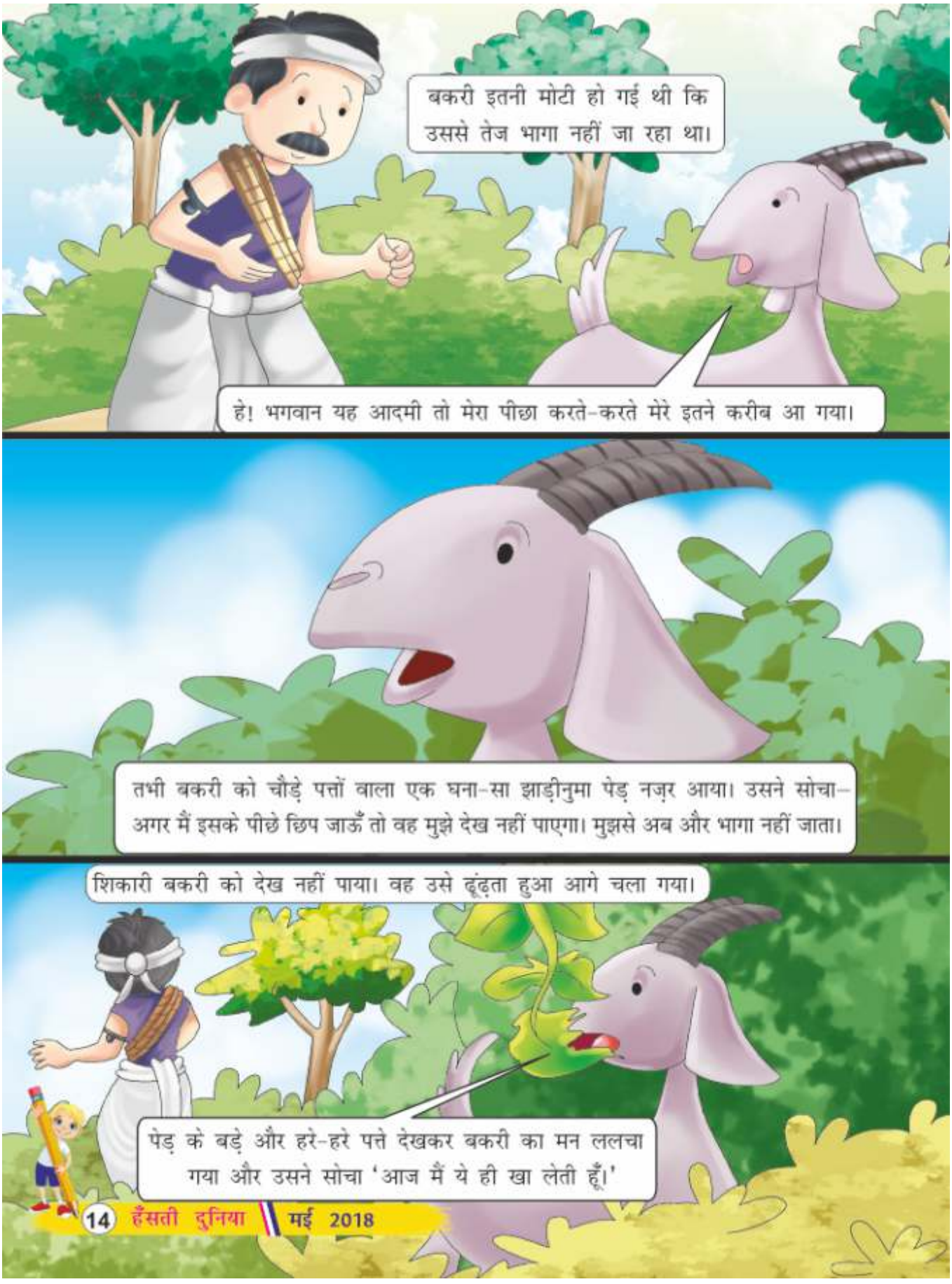
बकरी इतनी मोटी हो गई थी कि उससे तेज भागा नहीं जा रहा था।
हे! भगवान यह आदमी तो मेरा पीछा करते-करते मेरे इतने करीब आ गया।
तभी बकरी को चौड़े पत्तों वाला एक घना-सा झाड़ीनुमा पेड़ नज़र आया। उसने सोचा- अगर मैं इसके पीछे छिप जाऊँ तो वह मुझे देख नहीं पाएगा। मुझसे अब और भागा नहीं जाता।
शिकारी बकरी को देख नहीं पाया। वह उसे ढूंढ़ता हुआ आगे चला गया।
पेड़ के बड़े और हरे-हरे पत्ते देखकर बकरी का मन ललचा गया और उसने सोचा 'आज मैं ये ही खा लेती हूँ।'

बकरी ने पत्ते खाने शुरू कर दिए।
मजा आ गया आज तो।
परन्तु नतीजा यह हुआ कि पत्ते कम होने के कारण थोड़ी देर बाद ही बकरी नज़र आने लगी। तभी शिकारी बकरी को ढूंढ़ते हुए उधर आ गया और उसने बकरी को देख लिया।
ओह! तू यहाँ छिप गई थी। अब तो मैं तुझे पकड़कर ही रहूंगा।
बकरी के खाने से पत्ते कम हो गये और शिकारी ने उसे देख लिया और वह उसे पकड़कर ले चला।
हाय! मैंने यह क्या किया? जिसने मुझे आश्रय दिया मैंने उसी का नुकसान किया और अपने लालच के कारण पकड़ी गई।
शिक्षा:– कभी अपने आश्रयदाता की हानि नहीं करनी चाहिए।

कैसे बना बॉल प्वाइंट पेन

जानकारी : किरण बाला

जिस बॉल प्वाइंट पेन से आज आप लिख रहे हैं, उसका निर्माण आज से 75 साल पहले हुआ था। हंगरी के लैस्ज्लो बिरो ने इसे बनाया था। एक दिन बुडापेस्ट की प्रिंटिंग शॉप में उन्होंने देखा कि इंक पेपर में लगते ही सूख जाती थी। इससे उन्हें विचार आया कि इस प्रक्रिया का प्रयोग पेन बनाने में किया जा सकता है। इसके बाद स्याही उन्होंने फाउंटेन पेन में डाली। मगर, स्याही इतनी गाढ़ी थी कि वह पेन से नीचे नहीं उतर रही थी। कई सालों की मेहनत के बाद उन्होंने निब की जगह बॉल बेयरिंग की टीप लगा दी। यह इंक कार्टरिज से स्याही लेती थी और उसे कागज पर समान रूप से फैला देती थी।

शुरुआती बॉल प्वाइंट पेन जहाँ गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत पर काम करते थे। प्रेशराइज्ड ट्यूब और कैपलरी एक्शन से स्याही को फैलने या लीक होने से रोकता है। बिरो ने जून 1938 को इसका ब्रिटिश पेटेंट कराया। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद उन्हें हंगरी छोड़ने पर मजबूर होना पड़ा। इसके बाद अर्जेन्टीना में बसे बिरो और उसके भाई जॉर्ज ने 1944 में छोटे पैमाने पर पेन का उत्पादन शुरू किया। उनको पहला बड़े पैमाने पर मिला ऑर्डर रॉयल एयर फोर्स से था। उन्होंने 30 हजार पेन का ऑर्डर दिया था ताकि नेविगेटर अधिक ऊँचाई पर लिखने पर परेशानी न हो क्योंकि यहाँ फाउंटेन पेन की स्याही लीक हो जाती थी।

बॉल प्वाइंट पेन के पीछे भी एक रोचक किस्सा है। एक बार एक अमेरिकी वायुसेना ने एक ऐसी पेन की मांग की जो उड़ते हुए विमान में काम करे। यानी अधिक ऊँचाई पर उड़ते हुए दबाव परिवर्तन के कारण स्याही न छोड़े। इस मांग को पूरा करने के लिए ही बॉल प्वाइंट पेन का निर्माण किया गया।

इसमें प्रयुक्त होने वाली स्याही में विशेष पदार्थ मिले होते हैं जिससे यह बहुत गाढ़ी हो जाती है और पेन में से लीक नहीं होती। स्याही सूखाने के लिए ब्लाटिंग पेपर की जरूरत नहीं पड़ती क्योंकि यह कागज पर नहीं फैलती। यही नहीं, पानी डालने पर भी यह नहीं मिटती।

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ें और पढ़ाएं

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं अनेकों प्रान्तों की विभिन्न भाषाओं में छप रही हैं। हर प्रान्त की भाषा की पत्रिकाओं को बढ़ावा मिले और इनकी पाठक संख्या बढ़े इसकी जरूरत है। सन्त निरंकारी हिन्दी, अंग्रेजी, पंजाबी, मराठी, बंगाली, गुजराती, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, नेपाली, उड़िया व 'एक नज़र' हिन्दी, पंजाबी, मराठी तथा हँसती दुनिया हिन्दी, पंजाबी, मराठी, अंग्रेजी लगातार प्रगति कर रही हैं। पाठक और ब्रांच स्तर पर इनको प्रोत्साहन देने की आवश्यकता है।

वर्तमान में हँसती दुनिया, सन्त निरंकारी और एक नज़र का सदस्यता शुल्क 150 रुपये एक वर्ष के लिए तथा 700 रुपये पाँच वर्ष के लिए है। आप अपनी पत्र-पत्रिकाओं की सदस्यता शुल्क जमा कराकर सुनिश्चित कर लें तथा यदि इन्हें प्राप्त करने में आपको कोई परेशानी हो रही हो तो पत्रिका कार्यालय दिल्ली में कम्प्यूटर पर तुरन्त अपना सही पता, पिन कोड व मोबाइल नम्बर अवश्य चैक करवा लें/नोट करवा दें ताकि उसी अनुसार आपका रिकॉर्ड अपडेट किया जा सके।

पत्र-पत्रिकाओं की सदस्यता एवं अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए सम्पर्क का पता है -

पत्रिका-प्रकाशन विभाग, सन्त निरंकारी मण्डल,
एडमिनिस्ट्रेटिव ब्लॉक, निरंकारी चौक,
बुराड़ी रोड, दिल्ली-110009
Phone : +91-11-47660200, Extn. 360
Fax: +91-11-47660300, 27608215,
HelpLine: 47660360, 859, 9266629841
Email - patrika@nirankari.org

-सी.एल.गुलाटी
प्रभारी, पत्रिका-प्रकाशन विभाग
सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली-110009

बाल कहानी : राजकुमार जैन 'राजन'

जन्मदिन का उपहार

जैकी हिरण एक मेधावी छात्र था। वह हमेशा अपनी कक्षा में प्रथम आता था। इस कारण जंगल विद्यालय के कई शरारती छात्र उससे जलते थे। जैकी हिरण की कक्षा में ही जम्बू भालू भी पढ़ता था। वह धनी परिवार का सदस्य था। वह पढ़ने-लिखने में फिसड्डी था, लेकिन लड़ाई-झगड़े में सबसे आगे था।

जम्बू भालू जैकी हिरण से सबसे अधिक जलता था क्योंकि पूरे विद्यालय में जैकी की तारीफ होती थी।

छुट्टी होते ही जम्बू भालू अक्सर जैकी हिरण को परेशान किया करता। कभी उसकी कापी छीन लेता तो कभी कोई किताब। जैकी चुप रह जाता। उसने कभी भी अध्यापकों से जम्बू की शरारतों की शिकायत नहीं की। वह हमेशा जम्बू को समझाने की कोशिश करते हुए कहता, "जम्बू भाई, तुम ये शरारतें छोड़कर थोड़ा-बहुत पढ़ने में मन लगाओ।"

जम्बू भालू को विद्यालय का काम नहीं करने पर हमेशा डांट पड़ती। कई बार उसे मुर्गा भी बनाया गया था। लेकिन जम्बू ने जैसे न सुधरने की ठान रखी थी।

कुछ दिन बाद जम्बू भालू का जन्मदिन था। उसने जैकी हिरण सहित कक्षा के सभी छात्रों लम्बू जिराफ, भीमा हाथी, सोनू लोमड़, ब्लैकी पेमने, चुनमुन गिलहरी, नटखट चिड़िया आदि को भी जन्मदिन की पार्टी में आने का निमंत्रण दिया था।

उस पार्टी में जम्बू भालू ने अपने कुछ दोस्तों के साथ जैकी हिरण को अपमानित करने की योजना बना रखी थी।

जम्बू भालू का निमंत्रण पाकर जैकी हिरण कुछ परेशान-सा हो गया था क्योंकि न तो उसके पास पार्टी में जाने लायक अच्छे कपड़े ही थे और न ही जन्मदिन पर उपहार देने के लिए पैसे।

जैकी हिरण के पिताजी जमींदार हाथीराम के यहाँ नौकरी करते थे। बहुत मुश्किल से ही वह जैकी को पढ़ा पा रहे थे। जैकी को पिताजी से उपहार के लिए पैसे मांगने का साहस नहीं हुआ। पर उसने जम्बू भालू की पार्टी में जाने और उसे जन्मदिन का उपहार देने का निश्चय कर रखा था। उसने पड़ोस में रहने वाले अंकल से सौ रुपये उधार लिए और शीघ्र लौटाने का वादा कर वह बाजार चल पड़ा।

बाजार पहुँचकर जैकी हिरण ने सारे रुपयों के रंग-बिरंगे गुब्बारे खरीदे। कुछ गुब्बारों में हवा भरकर फूला दिया। उन्हें धागे के सहारे एक डंडे पर बांध लिया और पास के पार्क में जा पहुँचा। उस पार्क में बहुत सारे बच्चे अपने माता-पिता के साथ घूमने आते थे। कुछ ही देर में जैकी के सारे गुब्बारे बिक गये। जैकी ने रुपये गिने। उसे पूरे सौ रुपये का लाभ हुआ था।

उसने शाम को पड़ोस वाले अंकल के रुपये वापस लौटा दिए। अगले दिन जैकी हिरण ने फिर सौ रुपये के गुब्बारे खरीदे और उसी पार्क में पहुँच गया। अभी थोड़े से ही गुब्बारे बिके थे कि जम्बू भालू अपने कुछ दोस्तों के साथ वहाँ आ पहुँचा। उसने जैकी को गुब्बारे बेचते हुए देखा तो उसका खूब मजाक उड़ाया और बहुत से गुब्बारे फोड़ दिये।

जम्बू भालू के जाने के बाद जैकी हिरण ने बाकी बचे गुब्बारे बेचे। इस बार उसे पचास रुपये का ही लाभ हुआ। उन रुपयों से जैकी ने अच्छी और शिक्षाप्रद कुछ पुस्तकें खरीदी।

अगले दिन शाम को जम्बू भालू के जन्मदिन की पार्टी थी। दोपहर बाद जैकी हिरण जब जम्बू की पार्टी में पहुँचा तो चौंक पड़ा। वहाँ सन्नाटा छाया हुआ था। जम्बू और उसके साथी परेशान से बैठे थे।

जैकी हिरण को लम्बू जिराफ ने बताया, "आज जब जम्बू भालू के पिताजी 'जंगल सहकारी बैंक' से पचास हजार रुपये लेकर लौट रहे थे तो कोई बदमाश उनका ब्रीफकेस छीनकर भाग गया था। जम्बू के पिताजी ने शोर मचाया और उस बदमाश का पीछा किया लेकिन वह बदमाश अपने किसी साथी के साथ मोटरसाईकिल पर बैठकर भाग निकला।"

लम्बू जिराफ ने आगे बताया, "तभी जंगल का थानेदार शेरसिंह अपनी जीप से उधर से निकला। पुलिस वालों ने जम्बू भालू के पिताजी को जीप में बैठाकर बदमाशों का पीछा किया। बहुत दौड़-धूप के बाद उन्होंने मोटरसाइकिल वाले एक बदमाश को पकड़ लिया लेकिन दूसरा बदमाश वह ब्रीफकेस लेकर कहीं भाग निकला। इसलिए आज जन्मदिन की पार्टी नहीं हो रही है।"

जैकी हिरण चुपचाप वापस लौट आया। उस घटना ने उसे बहुत परेशान कर दिया था। वह घर न

जाकर पार्क में बैठ गया। काफी देर तक वह वहाँ चुपचाप बैठा रहा। तभी उसने दो-तीन कुत्तों को पास की झाड़ी में से कोई काली-सी वस्तु को खींचकर बाहर लाते देखा।

उस दृश्य को देखते ही जैकी हिरण बुरी तरह चौंक पड़ा। वह वस्तु कुछ और नहीं एक ब्रीफकेस था। उसने पास जाकर देखा। उस ब्रीफकेस के हैण्डल पर बंधे प्लास्टिक के कवर में एक कार्ड लगा हुआ था। उस कार्ड पर जम्बू भालू के पिताजी का नाम और घर का पता लिखा हुआ था। जैकी ब्रीफकेस लेकर दौड़ता हुआ जम्बू के घर पहुँचा।

जैकी हिरण ने जम्बू भालू के पिताजी को सारी कहानी सुनाई। जैकी की बात सुनकर वह कुछ सोचते हुए बोले, "अवश्य ही दूसरे बदमाश ने पुलिस से बचने के लिए ब्रीफकेस को पार्क की झाड़ियों में छिपा दिया होगा। इस तरह वह पुलिस से बचकर भाग गया और ब्रीफकेस को उन आवारा कुत्तों ने झाड़ियों से बाहर निकाल लिया।"

जम्बू भालू के घर में खुशियां लौट आईं। उसने जैकी हिरण से कहा, "जैकी भाई। मुझे क्षमा कर दो। मैंने तुम्हें कष्ट दिया है। लेकिन आज तुमने ब्रीफकेस लाकर हम सब पर बहुत बड़ा एहसान किया है। आज से मैं तुम्हारी हर बात मानूंगा और कोई शरारत नहीं करूंगा।"

जैकी हिरण मुस्कुराते हुए बोला, "ये पुस्तकें मैंने तुम्हें जन्मदिन पर उपहार देने के लिए गुब्बारे बेचकर खरीदी हैं। इन्हें स्वीकार करो।"

जम्बू भालू ने पुस्तकें लेकर जैकी हिरण से कहा, "जैकी, तुम्हारे इस उपहार को मैं सदैव अपने पास रखूंगा और तुम्हारी तरह अच्छा बनने की कोशिश करूंगा।"

वर्ग पहेली

प्रस्तुति : विकास अरोड़ा (रेवाड़ी)

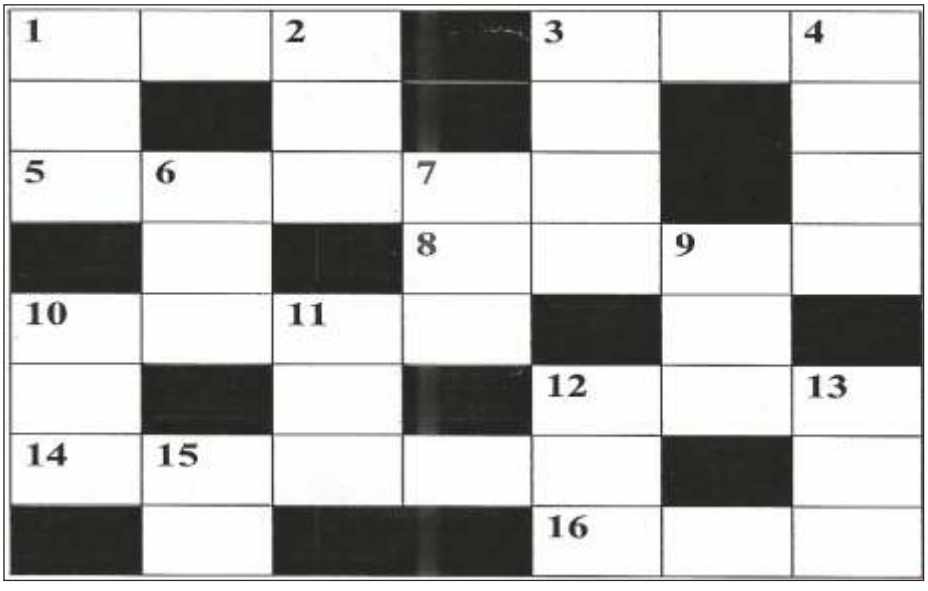

बाएं से दाएं

1. ... महीने की 24 तारीख को निरंकारी मिशन 'मानव एकता दिवस' मनाता है।
3. नेपाल और सूडान में से जो देश अफ्रीका महाद्वीप में स्थित है।
5. सन्धि करें– मन: + कामना।
8. प्राकृतिक रूप से बर्फ का गिरना : हि त पा म।
10. दिल्ली का मशहूर किला जिसकी प्राचीर से प्रधानमंत्री राष्ट्र को सम्बोधित करते हैं।
12. अशोक चक्र पुरस्कार प्राप्त करने वाली पहली भारतीय महिला .... भनोट थी।
14. जिसमें सहनशीलता हो।
16. बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना पंडित .... मोहन मालवीय ने की थी।

ऊपर से नीचे

1. जिस भारतीय राज्य की मुख्य भाषा असमिया है।
2. शुद्ध शब्द छांटिए : लढका / लड़का।
3. इस पंक्ति में छिपे एक देश का नाम ढूंढ़िए : मसूरी नाम का पर्वतीय स्थल उत्तराखंड राज्य में है।
4. घृणा का एक पर्यायवाची शब्द।
6. एल्फ्रेड बी. नोबल की सम्पत्ति का इस्तेमाल कर हर वर्ष .... पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं।
7. महिलाएं का एकवचन।
9. संसार का सबसे ऊँचा पठार।
10. लागोस और लाहौर में से जो शहर पाकिस्तान में नहीं है।
11. हर वर्ष 23 दिसम्बर को .... दिवस के रूप में मनाया जाता है।
12. भारत के छठे राष्ट्रपति ..... संजीव रेड्डी थे।
13. जिस देश की राजधानी टोकियो है।
15. तिरंगे की सबसे नीचे की पट्टी का रंग।

(वर्ग पहेली के उत्तर इसी अंक में हैं)

बाल कविता : हरप्रसाद रोशन

गौरैया

मुन्ना पूछे एक सवाल,
जरा बता दे मैया।
नहीं देखने को मिलती,
कहाँ गई गौरैया।।

पहले तो घर-आंगन में,
यह खूब फुदकती थी।
बना घोंसला खिड़की में,
हर रोज चहकती थी।।

गौरैया से घर-आंगन,
भरा-भरा दिखता था।
घर में इसका रहना एक,
सदस्य सा लगता था।।

मम्मी बोली- कठिन हुआ,
गौरैया का जीना।
शहरीकरण के दौर ने,
इसका जीवन छीना।।

बाल कविता : दिनेश दर्पण

पेड़

झूम-झूम कर गाते पेड़,
गाकर फिर मुस्काते पेड़।
शुद्ध हवा देकर सबको-
प्रदूषण दूर भगाते पेड़।

हवा जब तेज चलती है,
रुनझुन गीत सुनाते पेड़।
फूल, फल औषधि देकर-
परहित धर्म निभाते पेड़।

आँखों को सुकून देने को,
हरीतिमा खूब बढ़ाते पेड़।
सारे जीवन परहित करते-
फिर भी क्यूं कट जाते पेड़।

विशेष लेख : डॉ. परशुराम शुक्ल

महाराष्ट्र का राजकीय पशु

दैत्याकार गिलहरी

गिलहरी एक स्तनधारी जीव है। विश्व में लगभग 150 जातियों और उपजातियों की गिलहरियां पायी जाती हैं। इन सभी की शारीरिक संरचना, आकार, आदतों एवं व्यवहारों आदि में बहुत अधिक अन्तर होता है। कुछ गिलहरियां वृक्षों पर रहती हैं तो कुछ जमीन पर विचरण करती हैं। भारत सहित विश्व के अनेक भागों में कुछ ऐसी भी गिलहरियां पायी जाती हैं जो उड़ने वाले साँपों के समान उड़ती भी हैं। इन्हें उड़न गिलहरी (फ्लाइंग स्क्वैरल) कहते हैं। विश्व की सर्वाधिक विलक्षण गिलहरी है- प्रेरी गिलहरी। यह उत्तर अमरीका के प्रेरी के मैदानों में पायी जाती है। प्रेरी गिलहरी कुत्ते की तरह भौंकती है। इसीलिए इसे लम्बे समय तक कुत्ता समझा गया और 'प्रेरी डॉग' कहा गया। प्रेरी गिलहरी जमीन के भीतर बस्ती बनाकर रहती है। इसका जमीन के भीतर विश्व की सबसे बड़ी बस्ती बनाने का कीर्तिमान है।

सामान्यतया गिलहरी वृक्षों पर ही रहती है। यह भोजन आदि के लिए जमीन पर आती है और फिर वृक्षों पर वापस लौट जाती है। गिलहरी वृक्षों के साथ ही जमीन पर भी बड़ी तेजी से दौड़ती है तथा खतरा निकट होने पर एक मीटर तक ऊँची छलांग भी लगा सकती है। इसे प्रायः वृक्षों पर दौड़ते हुए और पूंछ के सहारे लटके हुए देखा जा सकता है। उत्तर अमरीका की धूसर गिलहरी (ग्रे स्क्वैरल) तो वृक्षों पर नटों के समान कलाबाजियां भी दिखलाती है। यह तीन-चार मीटर लम्बी छलांग लगाकर एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष पर पहुँच जाती है। इस समय इसकी पूंछ शारीरिक सन्तुलन बनाये रखने का कार्य करती है। धूसर गिलहरी बड़ी चालाक होती है। यह अपने शत्रु को देखते ही किसी मोटी डाल के पीछे छिप जाती है और यदि फिर भी इसका शत्रु इसके पास पहुँच जाये तो यह 10 मीटर तक की ऊँचाई से जमीन पर कूद पड़ती है और भाग जाती है।

गिलहरी के आकार, शरीर के रंगों, पूंछ की बनावट आदि में भी पर्याप्त विविधता होती है। इसका आकार चूहे से लेकर बिल्ली तक के बराबर हो सकता है। सामान्यतया गिलहरी धूसर, स्लेटी, काले, लाल, नारंगी अथवा ऐसे ही रंगों की होती है। कुछ गिलहरियां मौसम के अनुसार अपना स्थान भी बदलती हैं। गिलहरी की पूंछ गोल और बालदार होती है किन्तु धूसर गिलहरी की पूंछ चपटी होती है।

गिलहरी मूल रूप से शाकाहारी होती है। यह अनाज के दाने, विभिन्न प्रकार के फल, बेरियां आदि खाती है। इसके साथ ही यह छोटे-छोटे कीड़े-मकोड़ों का भी शिकार करती है और पक्षियों के अंडों को भी अपना आहार बनाती है।

गिलहरी प्रायः वृक्षों पर कपड़ा, ऊन, घासफूस आदि की सहायता से बड़ा मजबूत और आरामदायक घोंसला बनाती है और इसी में बच्चे देती है। यह एक स्तनधारी जीव है। अतः अपने बच्चों को दूध पिलाती है और उनका पालन-पोषण करती है।

भारत में गिलहरी की लगभग 20 जातियां और उपजातियां पायी जाती हैं। इनमें से कुछ तो ऐसी हैं जो पूरे देश में देखने को मिलती हैं। भारत में पायी जाने वाली सभी गिलहरियों को तीन भागों में बांटा जा सकता है- वृक्ष गिलहरी (ट्री स्क्वैरल) उड़न गिलहरी (फ्लाइंग स्क्वैरल) और दैत्याकार गिलहरी (जाइन्ट स्क्वैरल) इन तीनों में वृक्ष गिलहरी

सर्वाधिक सामान्य है। इसे धारीदार गिलहरी भी कहते हैं।

वृक्ष गिलहरी बाग-बगीचों, खण्डहरों, घरों और घरों के निकट के वृक्षों पर बहुतायत से पायी जाती है। इसकी लम्बाई 15 सेंटीमीटर से 75 सेंटीमीटर तक होती है तथा इसके शरीर के बराबर ही लम्बी इसकी पूंछ होती है। भारतीय वृक्ष गिलहरी के शरीर का रंग काला अथवा स्लेटीपन लिये हुए होता है तथा पेट एवं नीचे का भाग हल्का अथवा मटमैला सफेद होता है। इसकी पीठ पर तीन धारियां होती हैं। उत्तर भारत की वृक्ष गिलहरी के शरीर पर पांच धारियां होती हैं। इसकी दोनों बगलों पर एक-एक अतिरिक्त धारी होती है। इसकी पूंछ घने और मुलायम बालों वाली होती है तथा यह बार-बार अपनी पूंछ को झटके देती रहती है। वृक्ष गिलहरी बड़ी फुर्तीली और चालाक होती है। यह रात के समय वृक्षों पर किसी सुरक्षित स्थान पर आराम करती है और दिन में भोजन की तलाश में निकलती है।

भारत की दूसरी प्रमुख गिलहरी है- उड़न गिलहरी। उड़न गिलहरी प्रकृति का अद्भुत चमत्कार है। यहाँ यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि स्तनधारी जीवों में चमगादड़ को छोड़कर कोई भी जीव उड़ नहीं पाता। उड़न गिलहरी भी उड़ती नहीं है, बल्कि ग्लाइडिंग करती है। विश्व में उड़ने वाली गिलहरी की लगभग 30 जातियां हैं। यह भारत के साथ ही रूस, चीन, जापान तथा यूरोप, अफ्रीका और उत्तर अमरीका के अनेक भागों में पायी जाती है। भारत में उड़न गिलहरी की 7 जातियां पायी जाती हैं। भारत में हिमालय के पर्वतीय क्षेत्रों में सर्वाधिक उड़न गिलहरी है। यहाँ इसकी 6 जातियां देखने को मिलती हैं।

उड़न गिलहरी की शारीरिक संरचना सामान्य गिलहरी की तरह होती है किन्तु इसकी त्वचा इस

प्रकार की होती है कि यह उड़ते समय फैल जाती है और एक पैराशूट की तरह काम करती है। यह अपनी विशिष्ट त्वचा के कारण ही एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष तक 100 मीटर तक की दूरी ग्लाइडिंग करते हुए तय कर लेती है। उड़न गिलहरी वृक्ष गिलहरी के समान तेज और चंचल नहीं होती और न ही यह भोजन के लिए जमीन पर आती है। उड़न गिलहरी के दांत बहुत तेज होते हैं। इन्हीं से यह वृक्षों की मोटी-मोटी शाखाओं को खोखला कर देती है और यहीं आराम से रहती है। वृक्ष गिलहरी से विपरीत, उड़ने वाली गिलहरी रात्रिचर है। यह दिन के समय वृक्षों के कोटरों में विश्राम करती है और शाम होने के बाद भोजन की खोज में निकलती है। इसका प्रमुख भोजन विभिन्न प्रकार की बेरियां, फल और कठोर आवरण वाले नट हैं। इनके साथ ही यह कीड़े-मकोड़े भी खाती है। उड़न गिलहरी अनाज नहीं खाती। वृक्ष गिलहरी के

समान ही यह अपने बच्चों को दूध पिलाती है, उनकी सुरक्षा करती है और उनका पालन-पोषण करती है।

भारत की तीसरी प्रमुख गिलहरी है- दैत्याकार गिलहरी। दैत्याकार गिलहरी महाराष्ट्र का राज्य पशु है। इसे जंगली गिलहरी भी कहते हैं। दैत्याकार गिलहरी कभी भी घरों में अथवा बस्तियों के निकट नहीं आती। यह हमेशा घने जंगलों में ही रहती है। इसीलिए इसे जंगली गिलहरी कहते हैं। दैत्याकार गिलहरी बड़ी फुर्तीली होती है। इसका अधिकांश समय वृक्षों पर ही बीतता है। कभी-कभी यह छलांगें लगाती है और एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष पर पहुँच जाती है। यह जमीन पर बहुत कम ही आती है।

भारत की दैत्याकार गिलहरी विश्व में प्रसिद्ध है। यहाँ इसकी दो जातियां पायी जाती हैं- भूरी गिलहरी और मालाबार गिलहरी। भूरी गिलहरी भारत के एक बहुत बड़े क्षेत्र में पतझड़ और सदाबहार वनों में पायी जाती है। भूरी गिलहरी बड़ी सुन्दर होती है। इसकी पीठ और शरीर के ऊपर का भाग कत्थईपन लिये हुए भूरा होता है तथा पेट और नीचे का भाग हल्के रंग का होता है। इसकी लम्बाई 35 सेंटीमीटर से 45 सेंटीमीटर तक होती है तथा इसकी पूंछ इसके शरीर से भी बड़ी होती है। भूरी गिलहरी की पूंछ 60 सेंटीमीटर तक लम्बी हो सकती है। यह भारत की सबसे बड़ी गिलहरी है।

मालाबार गिलहरी दक्षिण भारत के मालाबार के पहाड़ी जंगलों और आसपास के कुछ क्षेत्रों में पायी जाती है। इसे श्रीलंका के जंगलों में भी देखा जा सकता है। यह भी भूरी गिलहरी के समान अपना अधिकांश समय घने जंगलों में वृक्षों की शाखाओं पर व्यतीत करती है।

दैत्याकार गिलहरी बड़ी शर्मीली होती है और हमेशा सतर्क रहती है। यह देखने में बड़ी सुन्दर लगती है। दैत्याकार गिलहरी का शरीर लम्बा, पतला और फुर्तीला होता है। इसकी पूंछ लम्बी होती है तथा इस पर भूरे अथवा धूसर रंग के घने, मुलायम बाल होते हैं। दैत्याकार गिलहरी अपने साथियों के साथ सांकेतिक आदान-प्रदान करने के लिए एक विशेष प्रकार की आवाजें निकालती है। यह खतरे के समय भी एक विशेष प्रकार की आवाज निकालती है, जिसे सुनकर इसके सभी साथी सचेत हो जाते हैं और सुरक्षित स्थानों पर जाकर छिप जाते हैं। दैत्याकार गिलहरी की एक प्रमुख विशेषता यह है कि यह एक छोटे से क्षेत्र में वृक्षों पर अलग-अलग स्थानों पर घास-फूस और पत्तियों की सहायता से अनेक घोंसले तैयार करती है।

दैत्याकार गिलहरी की आँखें बड़ी और कान छोटे होते हैं। इसके कानों पर मुलायम बालों के गुच्छे होते हैं तथा इसी प्रकार के काले रंग के घने और मुलायम बाल इसकी पूंछ पर होते हैं। इसके आगे के पैरों में 4-4 और पीछे के पैरों में 5-5 उंगलियां होती हैं एवं सभी पैरों में तेज नाखून होते हैं। इन्हीं नाखूनों की सहायता से ही यह वृक्षों पर भागती फिरती है। दैत्याकार गिलहरी के दांत भी कुतरने वाले जीवों (रोडेन्ट्स) की तरह जीवनभर बढ़ते रहते हैं। गिलहरी के दांत एक वर्ष में 15 सेंटीमीटर से लेकर 35 सेंटीमीटर तक बढ़ सकते हैं। यही कारण है कि यह दिनभर कुछ न कुछ कुतरती रहती है। ऐसा करने से इसके दांत निरन्तर घिसते रहते हैं और नियंत्रण में रहते हैं। कभी-कभी गिलहरी के मुँह में एक बीमारी हो जाती है, जिससे यह कोई वस्तु चबा नहीं पाती। ऐसी स्थिति में इसके दांत बढ़कर इसके मुँह के भीतर घुस जाते हैं और जबड़ों को बेकार कर देते हैं। परिणास्वरूप गिलहरी कुछ भी नहीं खा पाती और शीघ्र ही मर जाती है।

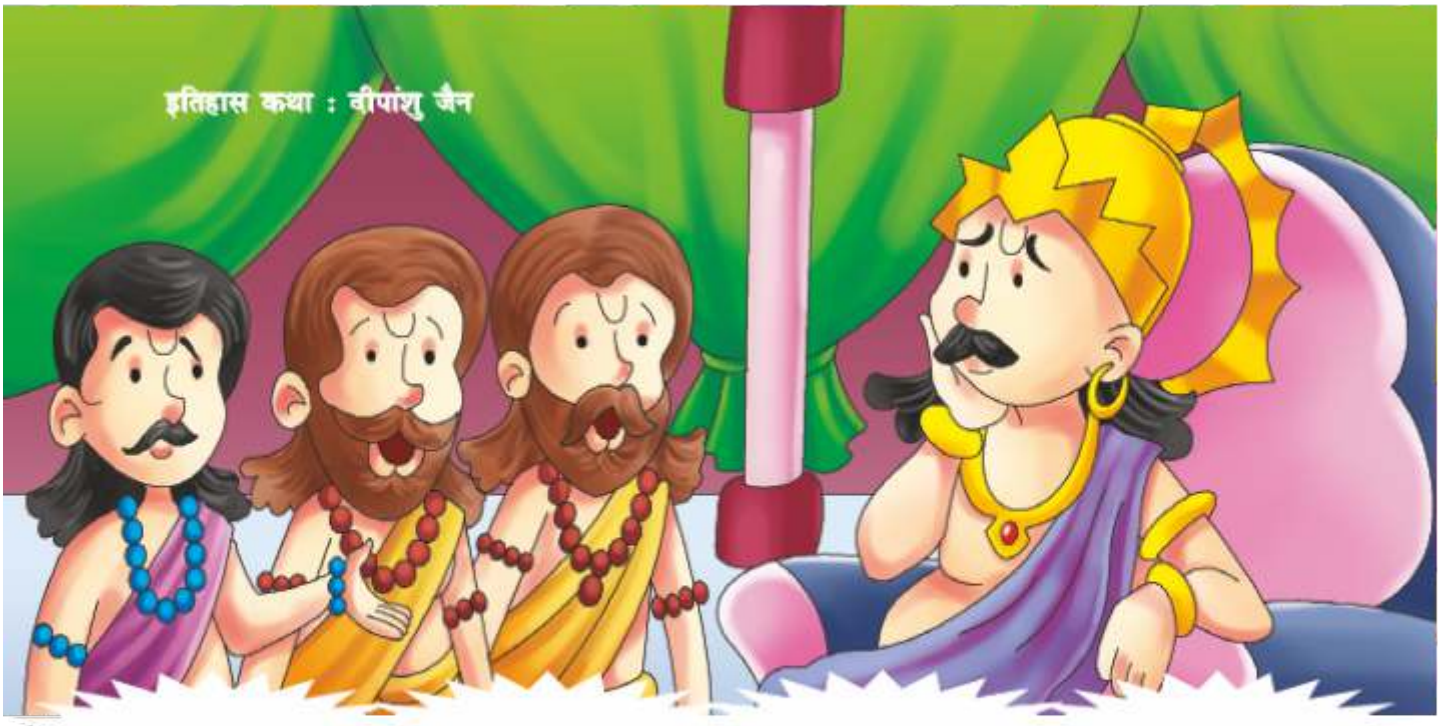

भविष्यवाणी

किसी समय में घाघ नाम के बड़े ज्योतिषी थे। उनका जन्म राजस्थान में हुआ था। लेकिन जितनी विद्या उनके पास थी, उतना वहाँ उनका आदर नहीं था। वह पोथी-पत्रे वाले ज्योतिषी नहीं थे। वह तो शकुन और पशु-पक्षियों की चाल-ढाल देखकर बता देते थे कि वर्षा होगी या नहीं, उसी के आधार पर वह देश में अकाल या सुकाल की भविष्यवाणी भी कर देते थे। उन दिनों मौसम की जानकारी देने वाले यंत्र तो थे नहीं। इसलिए इस विद्या का बड़ा महत्व था। फिर भी घाघ को अपनी जन्मभूमि में वह मान-सम्मान नहीं मिला, जो इतने बड़े ज्योतिषी को मिलना चाहिए था।

इससे दुखी होकर उन्होंने अपनी जन्मभूमि को छोड़ दिया और धार नगरी चले गये। वहाँ राजा भोज राज करते थे। वह बड़े उदार थे। गुणी लोगों के प्रति श्रद्धा रखते थे। उन्होंने घाघ का स्वागत किया और उन्हें 'राज-ज्योतिषी' का पद देकर अपने यहाँ रख लिया।

राजा भोज के दरबार में और भी बहुत से ज्योतिषी थे। उन्होंने देखा कि बाहर से आया एक आदमी राजा का कृपा-पात्र बन गया है, तो उनके हृदय में बड़ी ईर्ष्या उत्पन्न हुई लेकिन राजा के डर से वे कुछ कह या कर नहीं सके।

एक बार की बात है कि धार नगरी में और उसके दूर-पास तक वर्षा नहीं हुई। लगा, अकाल पड़ेगा। राजा को यह देखकर बड़ी चिंता हुई। उन्होंने अपने राज्य के सारे ज्योतिषियों को बुलाया और उनसे पूछा कि पानी पड़ेगा या नहीं?

सब ज्योतिषियों ने मिलकर विचार किया और राजा से कहा, "राजन्, इस वर्ष वर्षा का योग नहीं है, तीन वर्ष तक राज्य में भयंकर अकाल पड़ने की आशंका है।"

राजा को काटो तो खून नहीं। पानी न पड़ने से तीन साल का अकाल सब कुछ तबाह कर देगा।

पर वह करें क्या? पानी का पड़ना, न पड़ना उनके हाथ में तो था नहीं, बड़ी हैरानी की निगाह से राजा ने घाघ की ओर देखा, पूछा, "पंडित जी आपकी क्या राय है?"

घाघ ने अपना हिसाब लगाया था। उसके अनुसार वर्षा का योग था। पर उन्होंने सोचा कि इतने बड़े-बड़े ज्योतिषी एक स्वर में कह रहे हैं कि वर्षा नहीं होगी, तो उन्हें अपनी बात एकदम से नहीं कह देनी चाहिए। एक बार फिर हिसाब लगाकर देख लेना चाहिए। साथ ही, जंगल में पशु-पक्षियों की चाल-ढाल भी देख आनी चाहिए। बहुत से पशु-पक्षी ऐसे होते हैं, जिन्हें वर्षा होने का पहले से आभास हो जाता है और उससे उनकी चाल-ढाल और उनकी बोली में अंतर आ जाता है। यह सोचकर घाघ ने एक दिन की मोहलत ले ली।

इसके बाद घाघ जंगल में चले गये। घूमते-घूमते उन्हें एक गधा दिखाई दिया। उसके कान नीचे की ओर लटके हुए थे। घाघ ने सोचा कि यह वर्षा की पहचान है, उसका हिसाब सही है।

यह सोचते हुए वह आगे बढ़े, तो उन्होंने देखा कि चींटियों का बहुत बड़ा दल अपने मुँह में अन्न के कण दबाये तेजी से अपने बिलों की ओर बढ़ रहा है, आगे बढ़े तो देखते क्या हैं कि चिड़िया धूल में नहा रही है। फिर उन्होंने देखा कि चीलों का झुंड एक गोला बनाकर आकाश की ओर बढ़ता जा रहा है।

घाघ को अपने गणित पर पहले से ही विश्वास था। अब वह विश्वास और पक्का हो गया। पर दूसरे ज्योतिषियों ने इतने जोर से वर्षा न होने और अकाल पड़ने की बात कही थी कि घाघ के मन में थोड़ा संशय पैदा हो गया था। उन्होंने सोचा, अभी कुछ और जांच कर लेनी चाहिए।

दो चार कदम आगे बढ़ने पर उन्हें एक नाला मिला। उसके इस पार एक लड़की कुछ पशुओं को चरा रही थी और उस पार एक आदमी बकरियों को चरा रहा था। अचानक लड़की चिल्लाकर बोली- "बाबा बकरियों को लेकर जल्दी इस तरफ आ जाओ, बड़े जोर से पानी आने वाला है। फिर बकरियां नाला पार नहीं कर सकेंगीं।" बाबा बकरियों को लेकर इस पार आ गये। उन्होंने लड़की से पूछा, "बेटी, तुझे कैसे मालूम हुआ कि बारिश आने वाली है?"

लड़की ने कहा, "बाबा, नाले में टिटहरी ने अंडे दे रखे हैं। वह घबराई हुई अंडों को उठाकर दूसरी जगह ले जा रही है। देखो, वह कितनी

आवाज कर रही है। इससे साफ मालूम होता है कि उसे भान हो गया है कि पानी आने वाला है।''

अब घाघ को अपने हिसाब पर तनिक भी संदेह नहीं रह गया। वह अपने नगर लौट आये और राजा से मिले। राजा ने सारे ज्योतिषी इकट्ठे किये। उन सबके सामने घाघ ने कहा, ''राजन, आप चिंता न करें। वर्षा होगी... और अवश्य होगी।''

राजा ने कहा, ''यह तुम कैसे कह सकते हो? आसमान साफ है, न बादल है, न बिजली है। तब पानी कहाँ से आएगा?''

घाघ ने पूरे विश्वास के साथ उत्तर दिया, ''मैं कहता हूँ कि वर्षा होगी और मूसलाधार होगी।''

इतना कहकर घाघ अपने ठिकाने पर चले आये और खा-पीकर बिस्तर पर लेट गये। रात हो आयी। घाघ की निगाह आकाश पर टिकी थी। थोड़ी देर बाद उन्होंने देखा, इधर-उधर से बादल घिरने लगे। घाघ की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। थोड़ी-थोड़ी बूंदे भी पड़ने लगीं और कुछ ही समय में इतने जोर का पानी पड़ा कि जमीन पर नदी बहने लगी।

धरती की प्यास बुझ गयी। राजा का डर दूर हो गया। दादुर बोलने लगे, पपीहे 'पिऊ-पिऊ' करने लगे। चारों ओर आनन्द की लहर दौड़ गयी।

राजा ने पुलकित होकर सभा बुलाई। घाघ को भी बुलाया गया। घाघ ने सभा को सम्बोधित करते कहा, ''याद रखिये, हमारे पशु-पक्षी ऐसे यंत्र हैं, जो कभी झूठे नहीं हो सकते। उन्हें ठीक से जानने-पहचाने की जरूरत है। उनकी बोली हम भले ही न समझें, लेकिन उनके हाव-भाव, उनकी चाल-ढाल, बहुत कुछ कह देती है।''

राजा ने घाघ को सबसे बड़ी उपाधि से सम्मानित किया।

घाघ को जो लड़की नाले पर मिली थी। उसका नाम भेड्डरी था। घाघ ने बाद में भेड्डरी से विवाह कर लिया। ये वही घाघ और भेड्डरी हैं, जिनके ऋतु-सम्बन्धी दोहे और सूक्तियां आज भी जन-सामान्य में सर्वाधिक विश्वसनीय और प्रमाणिक माने जाते हैं।

आलेख : डॉ. विनोद गुप्ता

क्या हैं पवन चक्कियां

पवन चक्कियों का नाम तो आपने सुना होगा और कुछ ने उन्हें देखा भी होगा, लेकिन क्या आप जानते हैं, ये क्या हैं और कैसे काम करती हैं?

पवन चक्की एक ऐसी मशीन है जो हवा की ऊर्जा से दूसरी मशीनें चलाती है। दरअसल पवन चक्की में एक पहिया होता है जिसका सम्बन्ध चार विशाल पंखों से होता है। इन्हें किसी ऊँची मीनार पर लगा देते हैं। जब हवा इन पंखों से टकराती है तो ये घूमने लगते हैं। पंखों के घूमने से पहिया भी घूमने लगता है और उसके साथ धुरी भी घूमती है। गियरों से पहिये की गति का सम्बन्ध उस मशीन से कर दिया जाता है जिससे काम लेना होता है।

दुनिया की सबसे पहली पवन चक्की सातवीं शताब्दी में ईरान में अनाज पीसने के काम आती थी।

पवन चक्कियों का इस्तेमाल यूरोप में 12वीं सदी में हुआ था। शुरुआत में हॉलैंड और जर्मनी में इसका प्रयोग हुआ। हॉलैंड की पवन चक्कियां 6 से 14 हॉर्स पावर शक्ति प्रदान करती थी जबकि जर्मनी की 2 से 8 हॉर्स पावर।

जहाँ तक हॉलैंड का प्रश्न है, सबसे पुरानी पवन चक्की जेड्डस, गोल्डरलैंड में है जो सन् 1450 में बनाई गई थी।

धीरे-धीरे इनका प्रचलन बढ़ता गया। 19वीं सदी में अमेरिका सहित सम्पूर्ण विश्व में इसका इस्तेमाल होने लगा।

दुनिया की सबसे बड़ी जनरेटर पवन चक्की का निर्माण ग्रॉस विन्ड एनर्जी एनलेग ने किया था। इसे सन् 1982 में पश्चिम जर्मनी के फ्रेजियन तट पर लगाया गया था। इसका चक्र 150 मीटर ऊँचा है।

पवन चक्कियों का इस्तेमाल आटा पीसने, पानी के पम्प या बिजली के जनरेटर चलाने, मैदानों में एकत्र पानी को नहरों तक भेजने आदि के लिए होता है।

वर्तमान में बिजली से चलने वाली मोटरों के कारण पवन चक्कियों का प्रयोग कम होता है।

बाल कविता : कमलसिंह चौहान

मटके का पानी

गर्मी आई गुड़िया जागी,
छोड़ रजाई ठंडी भागी।
सूरज निकला धूप खिली है,
श्रेया सृष्टि दिव्या जागी।

सूखे पत्ते बिखरे आँगन,
बिन पत्तों के हो गए कानन।
पक्षी ढूढें नित्य बसेरा,
गायें भागी बकरी भागी।

कुल्फी ठंडाई बर्फ का गोला,
बेच रहा है चिंटू भोला।
आवाज सुन बच्चे हैं दौड़े,
खाई कुल्फी गरमी भागी।

मटके का अब मौसम आया,
ठंडा ठंडा पानी लाया।
निकला पसीना चमकी बूंदें,
गरम हवा की किस्मत जागी।

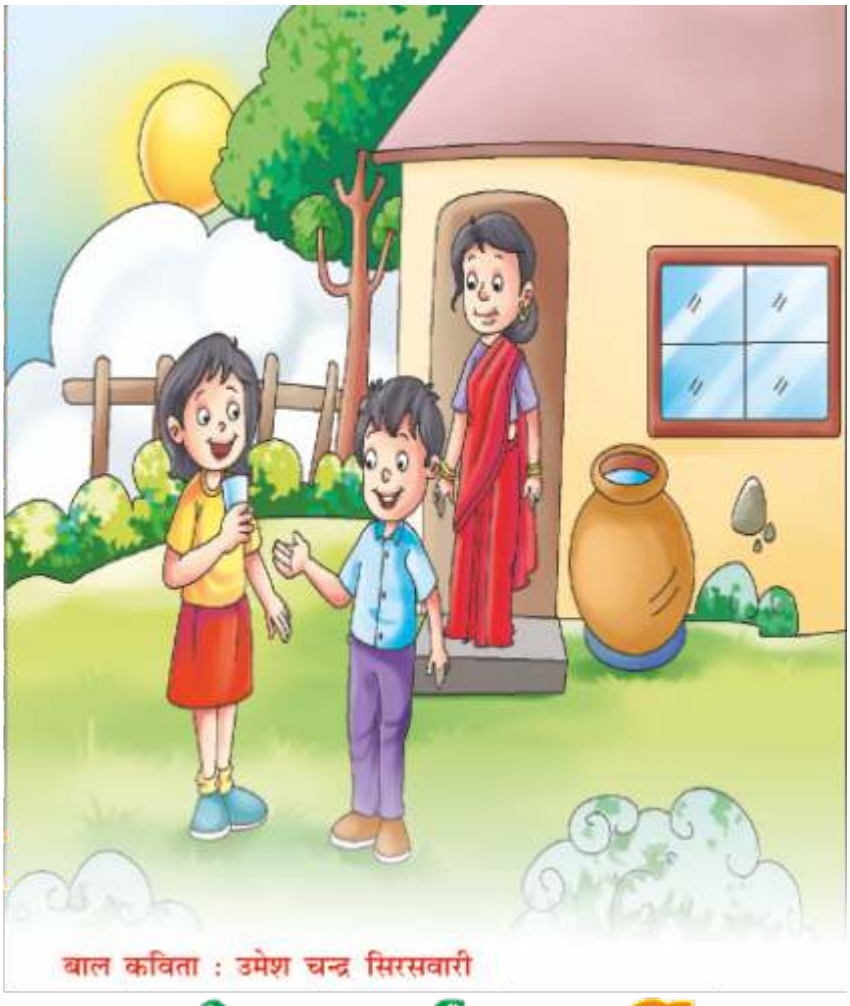

बाल कविता : उमेश चन्द्र सिरसवारी

लो आ गई गर्मी

गर्मी की चल पड़ी हवाएं,
बच्चे जाकर ताल नहाएं।

बागों में मिल-जुलकर खेलें,
धमा-चौकड़ी खूब मचाएं।

कुल्फी खाकर प्यास बुझाएं,
तब गर्मी से राहत पाएं।

स्कूलों में हो गई छुट्टी,
नैनीताल मनाली जाएं।

खींचे फोटो रंग जमाएं,
हर पल को इक 'याद' बनाएं।

वैज्ञानिक जानकारी : घमण्डीलाल अग्रवाल

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

प्रश्न : सिनेमा की रील में सभी लोग स्वाभाविक रूप से हिलते-डुलते क्यों दिखाई देते हैं?

उत्तर : मानव आंख का यह गुण है कि रेटिना पर बने प्रतिबिम्ब (Image) की संवेदना एक सैकिंड के सोलहवें भाग तक बनी रहती है। यदि इस वेग से जल्दी-जल्दी एक-सी तस्वीरें आंख के सामने से गुजारी जाएं, तो वे चलती-फिरती और सहज रूप से गति करती हुई प्रतीत होती हैं। सिनेमा की रील में एक सैकिंड में 24 या इससे अधिक तस्वीरें ली जाती हैं। अत: आंख के सामने से गुजारने पर ये चलती-फिरती नजर आती हैं।

प्रश्न : पेट में गैस क्यों बनती है?

उत्तर : पेट में गैस इन्टेस्टाइनल कान्टेंट के बैक्टीरियल फर्मेन्टेशन से बनती है जिसे फ्लैटलेंस कहते हैं। कभी-कभी दूध पीने के कारण भी गैस फार्मेशन हो जाता है। एंटीबॉयोटिक के प्रयोग से भी गैस बन जाती है। पेट में पाए जाने वाले अम्लीय द्रव्य और क्षारीय पैंक्रियाटिक जूसेज में होने वाली प्रतिक्रिया के कारण भी अकार्बनिक और नाइट्रोजनी गैसों का निर्माण होता है।

प्रश्न : चूजे सूर्य निकलते ही क्यों जाग जाते हैं और सूर्य डूबते ही क्यों सो जाते हैं?

उत्तर : चूजों की आंख में स्थित रेटिना पर बहुत कम डंड (Rods) होते हैं एवं शंकु अधिक होते हैं। शंकु केवल तेज प्रकाश के प्रति संवेदनशील होते हैं। अत: चूजे सूर्य निकलने के साथ उठ जाते हैं और सूर्य डूबने के साथ सो जाते हैं।

प्रश्न : रोते समय नवजात शिशु की आंखों से आंसू क्यों नहीं निकलते हैं?

उत्तर : दरअसल, शरीर में अनेक ग्रंथियां होती हैं और इन ग्रंथियों का अपना-अपना पृथक् कार्य भी होता है। इसी प्रकार से आंसू के लिए भी एक प्रकार की ग्रंथियां जिम्मेदार होती हैं। नवजात शिशु रोते समय आंखों से आंसू नहीं बहा सकते हैं। जानते हो क्यों? इसका कारण यह है कि आंसू बहाने की ग्रंथियां नवजात शिशु में मौजूद नहीं रहती। ये ग्रंथियां चार-पांच मास के बच्चों में ही विकसित होनी प्रारम्भ होती हैं।

कहानी : राधेलाल 'नवचक्र'

समय और सत्य

एक राजा था। उसने अपने राज्य में शिक्षा का प्रचार-प्रसार करना चाहा। इसके लिए शिक्षकों की नियुक्ति की घोषणा की गयी। उम्मीदवारों का स्नातक होना जरूरी था।

बहुत दिनों से एक युवक नौकरी की खोज में भटक रहा था। वह स्नातक भी था। उसने अनुकूल अवसर पाकर शिक्षक पद के लिए आवेदन कर दिया। समय पर साक्षात्कार के लिए बुलावा भी आया। साक्षात्कार में वह सम्मिलित भी हुआ। पूछे गए सभी प्रश्नों के उसने समुचित उत्तर भी दिए। अपने सभी आवश्यक प्रमाण-पत्र भी उसने दिखाए। चयन-समिति ने तुरन्त उसका चयन कर लिया। जल्दी ही उसे नियुक्ति-पत्र भी मिल गया।

नियुक्ति-पत्र पाकर एकाएक उसका मन उसे धिक्कारने लगा। मन के एक कोने से आवाज आई, "तूने स्नातक की परीक्षा नकल करके उत्तीर्ण की है। तुम्हारी उपाधि सही नहीं है। यह सच है ऐसे में तुम शिक्षक पद के योग्य नहीं हो। किसी अन्य उम्मीदवार का अधिकार तुम छीन रहे हो। यह अनुचित है। तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए, सच्चाई बताकर नियुक्ति-पत्र लौटा दो।"

फिर क्या था, उसका मन बदला। चयन-समिति के पास जाकर वह साफ बोला, "मैं इस नौकरी के योग्य नहीं हूँ। नियुक्ति-पत्र लौटा रहा हूँ।"

"क्यों?" चयन-समिति के एक सदस्य ने पूछा।

"दरअसल मैंने स्नातक की परीक्षा नकल करके उत्तीर्ण की है, अपनी प्रतिभा के बल पर नहीं। मेरा मन धिक्कार रहा है।" युवक ने सच्चाई समिति के सामने रखी।

वस्तुस्थिति जानकर समिति निरुत्तर हो गयी। तत्क्षण उसकी नियुक्ति रद्द कर दी गयी। उसकी जगह अन्य की नियुक्ति हुई।

अगले दिन मोहल्ले के लोगों को यह बात मालूम हुई। सबने उस युवक को कोसा, "तुम बेवकूफ हो। वर्षों से नौकरी के लिए भटक रहे थे। समय पर मिली भी तो तुमने अपनी मूर्खता से उसे गंवा दी। समय के महत्व को तुमने नहीं समझा। जो समय और अवसर तुमने खोया है वह बराबर जीवन में नहीं मिलने वाला है। याद रखो, समय बहुत मूल्यवान होता है। अपने अनुकूल समय को तुमने खो दिया। बहुत बड़ी गलती की है। सत्य तुम्हें कोई काम नहीं देगा। अब जीवनभर बेरोजगारी में भटकते रहोगे।"

मोहल्ले वाले की बातों से युवक निराश नहीं हुआ। अपने निर्णय पर उसे तनिक भी पछतावा नहीं था। समय पर सत्य कहकर उसे सुकून मिला था। शांति की अनुभूति हुई थी। उसने जो भी किया था, अन्तरात्मा की आवाज सुनकर ही किया था।

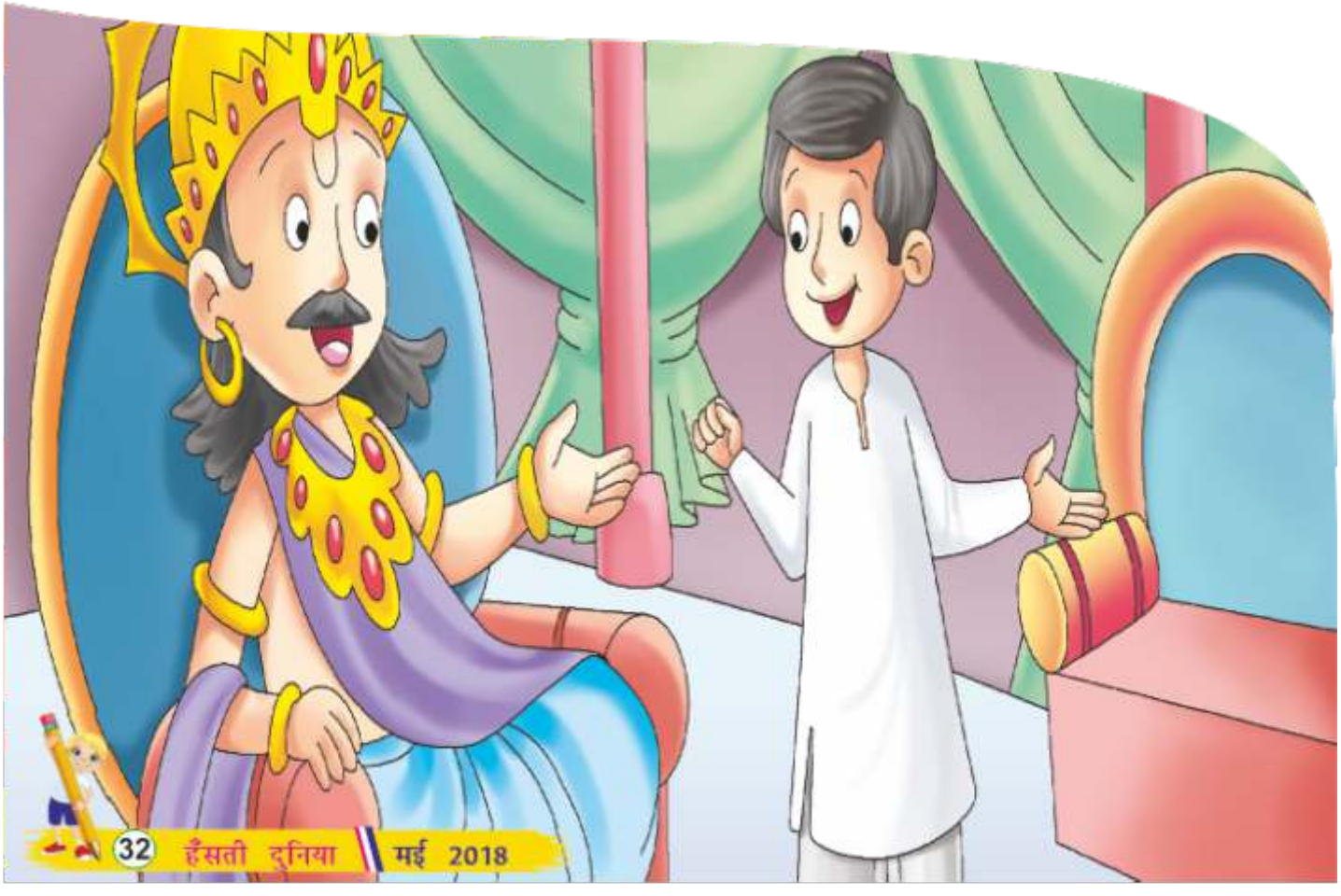

करीब दो वर्ष बाद राजा की ओर से उसकी बुलाहट हुई। वह राजा से मिला। राजा ने उससे कहा, "शिक्षक चयन-समिति द्वारा मुझे मालूम हुआ कि तुम सत्यनिष्ठ युवक हो। पाई हुई नौकरी तुमने दो वर्ष पहले छोड़ दी थी।"

"जी," वह बोला।

"राज्य को एक ईमानदार वित्तमंत्री की जरूरत है। मैं तुम्हारी सत्यनिष्ठा से प्रभावित हूँ और तुम्हें वित्तमंत्री का पदभार देना चाहता हूँ। स्वीकार करोगे न?"

"अवश्य," उसके मुख से अनायास निकल पड़ा और उसने अगले दिन से वित्तमंत्री का पदभार सम्भाल लिया।

कुछ दिनों के बाद वह अपने घर लौटा। अब मोहल्ले वालों ने उसकी खूब आवभगत की। किसी ने कहा भी, "तुम्हारी सत्यवादिता ने तुम्हें अच्छा पुरस्कार दिया। देर आए, दुरुस्त आए।"

जवाब में वह बोला, "भई, समय सचमुच बहुत मूल्यवान होता है। मगर मेरे ख्याल से सत्य उससे भी ज्यादा मूल्यवान होता है। समय बदलता है, सत्य नहीं।"

"बिल्कुल।" सबने एक स्वर से स्वीकारा।

जानकारी : विद्या प्रकाश

पेंगोलिन

लटकने वाला जन्तु

पेंगोलिन एक प्रकार का जन्तु है जो अफ्रीका में पाया जाता है। यह अपनी पूंछ के सहारे पेड़ पर लटका रहता है। अपनी पूंछ के सहारे पेड़ की डाली पर लटका हुआ पेंगोलिन ऐसा दिखाई देता है जैसे लटकते घोंसले में कोई नन्हीं चिड़िया मौजूद हो।

पेड़ की शाखाओं पर लटके-लटके ही यह अपनी लम्बी जीभ की सहायता से अपने शिकार को पकड़ लेता है और दीमकों, चीटियों, मक्खियों तथा उनके अंडों को खा लेता है। इसी कारण से इसे 'आंट ईटर' भी कहा जाता है। जब कभी इस पर संकट आता है, यह अपना शरीर गेंद की तरह गोल फुलाकर जमीन पर कूद पड़ता है।

पेंगोलिन की पूंछ की मांस-पेशियां बहुत शक्तिशाली होती हैं। यह पूंछ के सहारे लटके-लटके भी अपना पूरा शरीर ऊपर उठा लेता है। अपनी विचित्रताओं की वजह से यह सारी दुनिया में मशहूर है। इसे पालतू बनाना बहुत कठिन है। यदि इसे जबरदस्ती कैद भी कर लिया जाए तो यह खाना-पीना छोड़ देता है।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

मैं तो बाहर चली। मुझे तो बहुत गर्मी लग रही है। बॉय मम्मी मैं जा रही हूँ।
क्यों ना मैं किसी स्विमिंग पूल के पास जाऊँ? वहाँ तो पानी भी होगा और ठंडक भी।
अरे! यहाँ तो बहुत अच्छा लग रहा है क्यों न मैं मोंटू, मौली और चिंटू को भी यहाँ बुला लूँ? मैं अभी फ़ोन करती हूँ।

क्या तुम लोग भी स्वीमिंग पुल के पास आना चाहोगे। यहाँ बहुत ठंडक है।
हाँ! हम लोग भी वहाँ आते हैं। हम सब मिलकर बहुत मज़े करेंगे और गर्मी का पूरा लुत्फ उठाएँगे।
किट्टी! हम सब आ गए।
अरे! यहाँ तो सच में बहुत अच्छा लग रहा है।
क्यों न! हम सब मिलकर बॉल खेले?
हाँ! हाँ!! क्यों नहीं!

अरे! बॉल तो पानी में गई। अब कैसे निकलेगी?
अरे! इसमें परेशान होने वाली क्या बात है। मुझे स्विमिंग आती है। मैं निकाल सकती हूँ।
ये लो बॉल आ गई।
अरे वाह! किट्टी तुम तो बहुत होशियार हो।
इसमें होशियार वाली क्या बात है। हमें समय रहते सब काम आने चाहिए। हमें कभी भी किसी भी काम की जरूरत पड़ सकती है।
अब हम भी स्विमिंग सीखेंगे।
क्या तुम सब कोल्डड्रिंक पीओगे?
हाँ! हाँ! क्यों नहीं?
किट्टी! आज तो सच में बहुत मज़ा आ गया। हम सब गर्मी के दिनों में भी इतना मज़ा कर सकते हैं। यह कभी सोचा न था।

विशेष जानकारी : किरण बाला

प्रकाश पैदा करने वाले समुद्री जीव

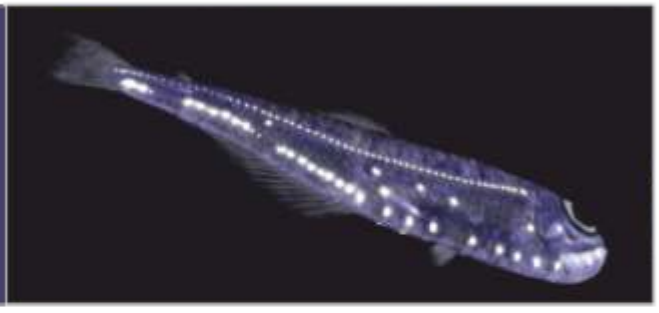

समुद्र की गहराइयों में असंख्य जीव पाए जाते हैं। इनमें से कुछ जीव ऐसे भी हैं जो प्रकाश पैदा करते हैं। मछलियों के अलावा प्रोटोजोआ कोइलेंट्रेट्स, पोलीकेक्ट्स, मोलपक्स, क्रुस्टासिंस आदि समूह के जीव भी अपने शरीर से प्रकाश पैदा करते हैं। इन जीवों के प्रकाश को जैविक संदीप्ति कहते हैं।

यह भी एक रोमांच और रहस्य का विषय है कि सभी समुद्री जीव (प्रजातियां) प्रकाश पैदा नहीं करते। प्रकाश पैदा करने वाली प्रजातियों की संख्या 600 के करीब है। वैज्ञानिकों के अनुसार, इन जीवों में प्रकाश का उत्सर्जन जटिल रासायनिक क्रिया के कारण होता है। कुछ जीवों में अंत:कोशिकीय क्रियाओं द्वारा यह क्रिया सम्पन्न होती है तो कुछ में बाह्य कोशिकीय क्रियाओं के कारण। जिन जन्तुओं में अंत:कोशिकीय क्रियाओं के कारण प्रकाश पैदा होता है, उनमें कुछ संदीप्ति ग्रंथियां होती हैं। जिन जीवों में बाह्य कोशिकीय क्रियाओं के कारण प्रकाश उत्पन्न होता है, उनके शरीर के किसी विशेष क्षेत्र में एक कोशिकीय या बहुकोशिकीय अंग होते हैं।

समुद्री जीवों के शरीर में ल्यूसीफेरिन और ल्यूसीफेरेज नामक दो पदार्थ होते हैं। इन दोनों की पारस्परिक क्रिया द्वारा ही प्रकाश पैदा होता है। विभिन्न समुद्री जीवों में प्रकाश पैदा करने वाले ये अंग त्वचा और पेट के किसी हिस्से में स्थित होते हैं।

जहाँ तक मछलियों का प्रश्न है, कुछ प्रजातियों की मछलियां प्रकाश पैदा करती हैं। उदाहरण के लिए लैंटर्न फिश द्वारा प्रकाश एक विशेष पेटर्न में पैदा होता है जबकि एंगलर फिश में प्रकाश पैदा करने वाले अंग उसके मुँह में होते हैं।

शोधकर्ताओं ने गहरे समुद्र में प्रकाश उत्पन्न करने वाले लैंटनशार्क की एक नई प्रजाति खोजी है। शोधकर्ताओं के अनुसार, एटमोपटेरस बेंकलेई नामक यह नई प्रजाति एकमात्र प्रजाति है, जिसकी खोज मध्य अमेरिका के प्रशांत तट पर हुई है। कुल मिलाकर लैंटनशार्क की 40 प्रजातियों में समुद्र में प्रकाश बिखेरने की क्षमता होती है।

अध्ययन के मुताबिक, खोजी गई नई प्रजाति को इसके रंग, शरीर की माप, डर्मल डेंटिकल्स की सजावट और वयस्क होने पर शरीर की माप के आधार पर दूसरी प्रजातियों से अलग किया जा सकता है। अमेरिका के कैलिफोर्निया में पैसिफिक शार्क रिसर्च सेंटर में अध्ययन के मुख्य लेखक विकी वास्क्वेज के अनुसार, इसके शरीर का रंग गहरा काला है, जबकि अन्य लैंटनशार्क का रंग भूरा होता है।

बालगीत : घमंडीलाल अग्रवाल

मत रूठो मुन्ने

घड़ी-घड़ी मत रूठो मुन्ने,
ठीक न होती रूसारूसी।

गाल फुलाना बुरी बात है,
नाक चढ़ाना बुरी बात है,
जिद की ज्वाला जला डालती-
मुंह लटकाना बुरी बात है।

सद्भावों के सुमन बिखेरो,
दूर हटाओ यह मायूसी।

पापाजी ने डांटा तो क्या,
माँ ने मारा चांटा तो क्या,
बड़े सिखाते हैं अनुशासन-
प्यार बहन ने बांटा तो क्या।

बूढ़ी नानी कब से बोले,
हँसने में कैसी कंजूसी।

गुस्सा झुलसा देता तन को,
गुस्सा है तड़पाता मन को,
गुस्सा तेज़ छुरी के जैसा-
गुस्सा खा जाता जीवन को।

आओ चलें खेलने हॉकी,
छोड़ो-छोड़ो दकियानूसी।

आलेख : गुलाम मोहम्मद 'खुर्शीद'

हवासील

विश्व में पक्षियों का विशाल पक्षी जगत है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि सम्पूर्ण पृथ्वी पर पक्षियों की लगभग 8600 प्रजातियां पाई जाती हैं। यदि इनमें उपजातियों एवं भौगोलिक जातियों को भी सम्मिलित कर लिया जाए तो यह संख्या 30,000 तक पहुँच जाती है। हवासील भारत में पाये जाने वाला एक पक्षी है।

हवासील को कई अन्य नामों से भी पुकारा जाता है। जैसे कुरेर, बिन्दु, चंचु तथा धूसर पेलिकन आदि। वास्तव में यह एक जलीय चिड़िया है। इसका आकार गिद्ध जैसा होता है। फिर भी मुख्य रूप से बाह्य लक्षणों में यह जलीय चिड़िया है जो धूसर (मटमैली) या धूसर सफेद रंग की होती है। इसके पैर बड़े तथा जालयुक्त होते हैं। पैरों की यह रचना पानी में तैरने में सहायक होती है। इसकी चोंच काफी भारी एवं चपटी होती है, जिसके नीचे सम्पूर्ण लम्बाई तक फीकी नील-लोहित त्वचा की एक प्रत्यास्थ थैली होती है। इसके ऊपरी चिबुक के किनारों पर नीले-काले रंग के बड़े-बड़े धब्बे होते हैं। इसकी दुम का रंग भी मटमैला भूरा-सा होता है। नर व मादा में कोई विशेष अन्तर नहीं होता है। अपितु एक समान ही होते हैं। ये अधिकतर झीलों, तालाबों आदि के किनारे देखने को मिलते हैं।

हवासील झुंड के झुंड बनाकर कुशलतापूर्वक जल में तैरते रहते हैं या फिर पंक (कीचड़) तटों पर बैठकर प्रसाधन करते रहते हैं। भोजन प्राप्ति के लिये मछलियों का शिकार करने की इनकी अपनी ही कला एवं तकनीक है। मछली शिकार के लिए कई हवासील एक साथ मिलकर प्रयास करते हैं। ये अर्द्धवृत्ताकार आकृति बनाकर तैरते समय अपने पंखों को फड़फड़ाते रहते हैं, परिणामस्वरूप ऊपर की ओर भागती हुई मछलियां उनमें समा जाती हैं।

यद्यपि ये आकार में बड़े होते हैं, इसके उपरान्त भी जल से निकलकर हवा में उड़ने में इन्हें कोई कठिनाई नहीं होती है। एक बार ऊपर उठने पर फिर तो ये बहुत ही कुशलता से लयबद्ध रूप से पंखों को फड़फड़ाते तथा सिर को कंधों के बीच रखे हुए तेजी से उड़ान भरते हैं।

आश्चर्य की बात तो यह है कि जलीय पक्षी होने के बावजूद यह अपना घोंसला पानी से दूर ताड़ के वृक्ष या किसी लम्बे पेड़ पर बनाता है। घोंसला बड़ी-बड़ी टहनियों द्वारा निर्मित एक मंच सा होता है। एक ही वृक्ष पर कई-कई घोंसले होते हैं। शनैः-शनैः घोंसलों की संख्या बढ़ते-बढ़ते इनकी बस्तियां विस्तृत क्षेत्र में फैल जाती है। मादा हवासील दो या तीन अंडे देती है, जिनका रंग खड़िया जैसा सफेद होता है।

भारत के अतिरिक्त पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका एवं बर्मा में भी हवासील पाया जाता है।

प्रेरक-प्रसंग : राजकुमार

यूँ तोला गया धुआं

बात इंग्लैंड की है। इंग्लैंड की महारानी एलिजाबेथ के दरबार में एक दरबारी था। उसका नाम था वाल्टर। वाल्टर बुद्धिमान व हाजिरजवाब था। महारानी एलिजाबेथ के हर प्रश्न का जवाब वाल्टर के पास हाजिर रहता था।

एक बार एलिजाबेथ ने सोचा वाल्टर से ऐसा प्रश्न किया जाए जिसका जवाब उसके पास न हो। काफी सोचने के बाद महारानी ने एक बार वाल्टर से पूछा, "वाल्टर, यदि कोयला जलाया जाए तो क्या तुम उससे निकले धुएं का वजन बता सकते हो?"

दरबार में चुप्पी छा गई। हर कोई सोच रहा था कि आज तो वाल्टर को मात खानी ही पड़ेगी।

वाल्टर ने कुछ क्षण चुप रहने के बाद कहा, "महारानी जी, यदि यह आपका आदेश है तो मैं अवश्य ही आपको धुएं का वजन बता सकूंगा।" फिर वाल्टर ने एक कोयला तथा एक छोटा-सा तराजू मांगा। तराजू और कोयला आ गया।

अब सबसे पहले वाल्टर ने तराजू में कोयले का वजन तोला। फिर उसे सुलगाना (जलाना) शुरू किया। कोयले से धुआं निकलकर धीरे-धीरे आकाश में जाने लगा। सभी देखने वाले हैरत में थे कि धुआं तो ऊपर चला गया। अब वाल्टर किस तरह उसका वजन करेगा?

धीरे-धीरे पूरा कोयला जल गया और शेष रह गई उसकी गर्म-गर्म राख। वाल्टर ने अब बड़ी सतर्कता से बची हुई राख को उठाकर तराजू के पलड़े में रखा। उसका वजन किया। फिर महारानी सहित सारे दरबार को सम्बोधित करते हुए वाल्टर ने कहा, "पहले कोयला जला और धुआं उड़ता गया। अब केवल उसकी राख बची है। इसलिए हम कोयले के पहले किये हुए वजन में से राख का वजन घटा दें तो शेष बचा हुआ वजन धुएं का वजन होगा, ठीक है न?"

सभी दरबारी और महारानी एलिजाबेथ एक बार फिर वाल्टर की बुद्धि का लोहा मान गये। महारानी ने उसे तुरन्त अपने गले का हीरों का जड़ा हुआ कीमती हार भेंट कर दिया।

आगे चलकर यही वाल्टर 'सर वाल्टर रैले' नाम से विश्वविख्यात हुआ।

बड़ी दुस्साहसी मछली है : रिमोरा

समुद्र में पायी जाने वाली मछलियों में यह आकार में काफी छोटी है, लेकिन काफी दुस्साहसी मछली है रिमोरा। अपने माथे पर लगी गद्दी से समुद्र के विशालकाय प्राणियों पर भी आक्रमण करने से नहीं चूकती है यह मछली। यही कारण है कि शॉर्क और ह्वेल जैसी मछलियां भी इससे भय खाती हैं। इसका आक्रमण करने का तरीका बड़ा निराला है। इतनी तीव्र गति से यह भयंकर वार करती है कि बड़ी-बड़ी मछलियां दुम दबाकर भाग खड़ी होती हैं। यह उन्हें भगाकर ही चैन नहीं लेती, बल्कि उनका भोजन भी स्वयं चट कर जाती है।

काफी चतुर है : पायलेट फिश

समुद्र में एक और छोटे आकार की मछली पायी जाती है- पायलेट फिश। बिना आक्रमण किये भोजन प्राप्त करने की कला में यह प्रवीण है। भोजन की खोज में यह शॉर्क के इर्द-गिर्द मंडराती रहती है और उसके चारों ओर परिक्रमा कर उसे काफी परेशान करती है। आकार में यह इतनी छोटी है कि शॉर्क इस पर आक्रमण की बात भी नहीं सोचता। कभी-कभी यदि शॉर्क को काफी परेशान कर देती है तो शॉर्क को गुस्सा अवश्य आ जाता है। बड़ी मछली के धोखे में कभी-कभी यह नन्हीं-सी मखमली मछली समुद्री जहाजों की परिक्रमा करने लगती है तो यह दृश्य देखने लायक होता है।

समुद्री खीरा

आपको यह जानकर काफी आश्चर्य हो रहा होगा कि आपने खेत में उगने वाले खीरे के बारे में अवश्य सुना होगा, लेकिन अब यह समुद्री खीरा कैसा होता है। दरअसल, यह समुद्र में पाया जाने वाला एक विचित्र प्राणी है। इसका शरीर भीतर से काफी खोखला होता है, जिसके अन्दर मुक्ता मछली घर बनाकर रहती है और भूख लगने पर इसका मांस कुतर-कुतर कर खाती है। लेकिन एक बार में मुक्ता मछली उतना ही मांस कुतरती है कि जिससे इसके शरीर को कोई हानि नहीं पहुँचे। जापान के समुद्र तट पर पाया जाने वाला यह खीरा काफी स्वादिष्ट होता है। जापान के समुद्र तट पर यह खीरा भारी मात्रा में पाया जाता है। जापान के लोग इसे चाव से खाते ही नहीं बल्कि इसका निर्यात भी किया जाता है। यह निरीह प्राणी जीवनभर दूसरों की उदर पूर्ति का माध्यम बनता है, बाजारों में बिकता है, लेकिन बदले में इसे कुछ नहीं मिलता।

प्रस्तुति : पुष्पेश कुमार

बाल कहानी : नरेश कुमार बंका

राजा का फैसला

सिकन्दर के पिता राजा फिलिप के दरबार में एक सिपाही के मुकदमे की सुनवाई चल रही थी। इस बीच राजा फिलिप को अचानक नींद आ गयी, पर मुकदमे की सुनवाई चलती रही। सुनवाई खत्म होते ही फिलिप की नींद टूट गई और उसने सिपाही को दण्डित करने का फैसला सुना दिया।

फैसला सुनकर सिपाही ने जवाब दिया– फैसला गलत दिया गया है, मैं अपील करता हूँ।

राजा फिलिप का फैसला अन्तिम था। उसके खिलाफ अपील का तो कोई सवाल ही नहीं था। अत: राजा मुस्कुराकर बोला– आखिर तुम यह अपील करोगे किसके पास?

सिपाही ने एक-एक शब्द पर जोर देते हुए कहा– मैं सोते हुए राजा फिलिप के विरुद्ध जागे हुए राजा फिलिप के आगे अपील करता हूँ।

सिपाही का उत्तर सुनकर राजा निरुत्तर हो गया और उसने फैसला ठीक करते हुए सिपाही को माफी दे दी।

पढ़ो और हँसो

मालिक : (ड्राईवर से) तुम अचानक कार इतनी तेज से क्यों चलाने लगे?

ड्राईवर : सर! गाड़ी का ब्रेक फेल हो गया है, इसके पहले कि कुछ हो हम जल्दी से घर पहुँच जाते हैं।

★----------★

निर्मला : (गीता से) क्या बात है मटर-पनीर में पनीर नजर नहीं आ रहा है।

गीता : अरे तुमने कभी गुलाबजामुन में जामुन देखा है क्या?

★----------★

केशर उपासना से बोला– जाओ आईना लेकर आओ, मैंने अपना चेहरा देखना है।

उपासना खाली हाथ लौटकर बोली– केशर किसी भी दर्पण में आपका चेहरा दिखाई नहीं दिया। सबमें मैंने देखा मेरा ही चेहरा था।

★----------★

भिखारी : ओ सेठ, मुझे कुछ दो। भगवान तुम्हारा भला करेगा।

सेठ : तेरे पास 100 का छुट्टा है?

भिखारी : हाँ है ना।

सेठ : तो पहले वे खर्च ले।

★----------★

एक बार ताऊ एक सिनेमा हॉल में फिल्म देखने गया। वह सबसे आगे की सीट पर बैठ गया। फिल्म शुरू हुई। सामने पर्दे पर रेलगाड़ी आती दिखाई दी तो नजदीक आती रेलगाड़ी को देखकर ताऊ घबरा गया। वह फौरन अपनी सीट पर से खड़ा हुआ तथा मारे भय के चिल्लाता हुआ हाथ हिला-हिलाकर जोर से बोला– 'रै ... रोकिये जल्दी रेल नैं आग्गै तेरे सामणै माणस बैठे फिल्म देखैं सैं। कदे कर दे सबका दलिया।'

★----------★

बेटा : पापा-पापा! अगर चाँद पर आबादी हो गई तो क्या होगा?

पापा : बेटा, होगा क्या ...? चाँद पर रहने वाले जो भी कूड़ा-करकट वहाँ से फैंकेंगे, वो सीधा हमारे ऊपर आकर गिरेगा।

★----------★

बॉस : (नये कर्मचारी से) हम सफाई पर काफी जोर देते हैं। क्या आपने अन्दर आने से पहले पायदान पर पैर साफ किये थे?

कर्मचारी : यस सर।

बॉस : हम सच बोलने पर भी काफी जोर देते हैं। बाहर कोई पायदान नहीं है।

– आनन्द प्रकाश (रिठाल)

अंग्रेजी भी बड़ी अजीब भाषा है। 'सीएच' (ch) से कभी 'च' बोलते हैं तो कभी 'क' बोला जाता है।

इसी प्रकार हमारे एक दोस्त मेडिकल में किसी से मिलने गये तो उन्होंने वहाँ ड्यूटी दे रहे चोपड़ा नामक डॉक्टर से पूछा– डॉक्टर साब ... ये ... 'चैमिस्ट्री' डिपार्टमेन्ट किधर है?

डॉक्टर बोले– भई चैमिस्ट्री नहीं बल्कि 'कैमिस्ट्री' बोलते हैं। 'सीएच' (ch) यानी क। समझ गये।

–समझ गया डॉक्टर साब– वह बोला।

–क्या समझे?

–यही कि आप चोपड़ा नहीं बल्कि कोपड़ा हैं।

पत्नी : अजी सुनते हो पड़ोस की रिंकी को मैथ में 100 में से 99 नंबर मिले हैं।

पति : अच्छा तो एक नंबर कहाँ गया?

पत्नी : अपना बेटा लेकर आया है।

एक किसान का ट्रैक्टर रास्ते में अचानक कीचड़ में फंस गया। तभी एक अंग्रेज आया। उसने पूछा– व्हाट आर यू डूइंग?

किसान बोला– माई ट्रैक्टर इज कीचड़ में फसिंग। न हिलिंग, न डुलिंग, सिर्फ ढर्र...ढर्र... करिंग।

एक सीधा-सादा देहाती थाने पहुँचा और थानेदार से बोला– जनाब, मेरे घर में एक चोर है, उसे पकड़ लें।

थानेदार : तुम उसे किसकी निगरानी में छोड़कर आए हो।

देहाती : किसी की भी नहीं, मैं उसके पांव रस्सी से बाँधकर आया हूँ।

थानेदार : पर उसके हाथ तो खुले हैं, वह पांव का रस्सा खोलकर भाग जाएगा।

देहाती : जब यह आइडिया मेरे दिमाग में नहीं आया तो उसके दिमाग में कैसे आएगा?

राम : छोटे एवं बड़े सभी मेरे पिताजी के आगे कटोरा लेकर खड़े रहते हैं।

श्याम : फिर तो तुम्हारे पिताजी बहुत अमीर होंगे?

राम : नहीं, वे गोलगप्पे बेचते हैं।

कविता : बिल्ली और गाय आपस में बहनें हैं बताओ कैसे?

विजय : पता नहीं दीदी।

कविता : गाय माता होती है और बिल्ली मौसी।

– गुरचरण आनन्द (लुधियाना)

संग्रहकर्ता : जगतार चमन 'अनूपगढ़'

कभी न भूलो

★ जिनमें नम्रता नहीं आती, वे विद्या का पूरा सदुपयोग नहीं कर सकते। – महात्मा गाँधी

★ जो व्यक्ति अशिक्षित है, वह गरीब है।
–जवाहरलाल नेहरु

★ निराशा संभव को असंभव बना देती है।
– जयशंकर प्रसाद

★ बुराई के सामने झुकना कायरता है।
– सुभाषचन्द्र बोस

★ जिस समाज में सदाचार नहीं, वह नष्ट हो जाता है।
– लोकमान्य तिलक

★ आचरण भाव का प्रगट रूप है। – यशपाल

★ ईमानदार का हर काम खुलेआम होता है।
– चाणक्य

★ दया मनुष्य का स्वाभाविक गुण है।

★ संसार में सबसे बड़ा अधिकार सेवा और त्याग से प्राप्त होता है। – प्रेमचन्द

★ सफलता का रहस्य है– दृढ़ संकल्प, मेहनत और साहस।

★ आचरण ही मनुष्य के जीवन का स्वर्ग या नरक निर्धारित करता है। – स्वामी विवेकानन्द

★ खुशी का सबसे बड़ा रहस्य त्याग है।
– एंड्रयू कार्नेगी

★ यदि हम निरन्तर अभ्यास और कर्म में लगे रहें तो हम जो चाहें वो कर सकते हैं। – हेलेन केलर

★ ऐसा वक्त आ सकता है जब हम अन्याय को रोकने में असमर्थ हों, लेकिन ऐसा वक्त कभी नहीं आना चाहिए जब हम विरोध करने में नाकाम रहें।
– एलि विसेल

★ जो कुछ भी विश्व को अधिक मानवीय और विवेकशील बनाता है उसे प्रगति कहते हैं।
– डब्ल्यू लिपमैन

★ पूरा जीवन एक प्रयोग है। जितने अधिक प्रयोग आप करेंगे, उतना ही अच्छा।
– राल्फइमर्सन

★ आदत डालनी है तो परहित करने की आदत डालें। – धर्म बारिया

★ जब कोई मनुष्य किसी दूसरे के दोषों पर अंगुली उठाता है तो उसे ध्यान रखना चाहिए कि शेष तीन अंगुलियां उसकी ओर संकेत कर रही हैं। – अज्ञात

★ नम्रता के पीछे स्वार्थ हो तो वह ढोंग है।
– बीचर

★ जिसमें विनय नहीं, वह विद्वान नहीं है।
– अष्टावक्र

★ जो किसी का उपकार करना नहीं जानता। उसे किसी प्रकार का उपकार पाने का भी कोई अधिकार नहीं। – लैटिन लोकोक्ति

★ आपका सच्चा और सबसे अच्छा दोस्त वह है जो आपकी कमजोरियों की दूसरों से चर्चा नहीं करता, लेकिन आप से साफ-साफ कह डालता है। – अंग्रेजी लोकोक्ति

★ स्वास्थ्य सबसे बड़ा उपहार है, सन्तोष सबसे बड़ा धन है, विश्वास सबसे बड़ा सम्बन्ध है।
– महात्मा बुद्ध

★ असफलता केवल यह सिद्ध करती है कि सफलता का प्रयत्न पूरे मन से नहीं हुआ।

★ बिना ईमानदारी के जीवन के किसी भी क्षेत्र में कामयाब नहीं हो सकते।

★ अगर आप सोचते हैं कि आपको सबकुछ आता है तो यकीन मानिये आपको कुछ नहीं आता। – हितोपदेश

बाल कविता : कमलसिंह चौहान

अनमोल हैं बच्चे

मुस्कुराते खिलखिलाते देश की शान बच्चे।
निष्कलंक चांदनी में नहाते अरमान हैं बच्चे।
सूरज की पहली किरण से संवर जाते,
बगीचे के फूलों से जाते निखर बच्चे।

बच्चों के मन में कहीं कोई भेद नहीं,
लगी चोट दिल पर उसका कोई खेद नहीं।
कोयल की कूहक से मुखर हो जाते सदा,
निर्मल झरने से बहते रहते सदा बच्चे।

भोर की पगडंडी पर चलते रहते निरंतर,
छोटे-बड़े ऊँच-नीच का मानते नहीं अंतर।
विकास के रथ पर सवार सदा बढ़ते जाते,
हथेली की रेखा बदलने का गुर जानते बच्चे।

आजाद भारत में ये पलकर बढ़े हैं,
भारत माता के पावन चरणों में खड़े हैं।
वीर अर्जुन सा लक्ष्य साधने में रहें माहिर,
हर एक की पहली पसंद अनमोल हैं बच्चे।

दो बाल कविताएं : राधेलाल 'नवचक्र'

टमटम

टमटम की यदि करो सवारी,
खूब मजा आता है।

टमटम वाला अच्छा हो तो,
सैर बहुत भाता है।

ऊबड़-खाबड़ अगर सड़क हो,
हिचकोले खाओगे।

बिदका घोड़ा तो सुन भाई,
नव अनुभव पाओगे।

मार्च अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1 **खुशी शाक्या** 14 वर्ष
308, महावीर नगर,
भरथना, जिला : इटावा (उ.प्र.)

2 **भाविका खिमनानी** 10 वर्ष
योगेश्वर सोसायटी, नियर भुरवा रोड,
ड्रीम इंडिया स्कूल, गोधरा (गुजरात)

3 **काव्या संदूजा** 12 वर्ष
765/66, लेन नं. 3, नियर ओम स्वीट,
अर्जुन नगर, गुरुग्राम (हरियाणा)

4 **महक सोनी** 13 वर्ष
दिल्ली पब्लिक स्कूल, झाकड़ी,
जिला : शिमला (हि.प्र.)

5 **परी** 10 वर्ष
चंदूलाल वकील की गली, चर्च रोड
नियर रोशनी आई हॉस्पिटल
गोधरा (गुजरात)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं–

सिमरन (मरांडा), पलक (मालनू),
अशमीत (सूरत),
आदित्य (सुन्दर नगर, अजमेर),
तुषार (मथुरा), शिवानी (सोहवा),
ऋतु (मुझोली, अल्मोड़ा), पूजा (भटिंडा),
मनस्वी (मनमाड),
समर्पिता (अंवति विहार, रायपुर),
प्रीति (रायपुर), प्रियल (रायपुर),
मुस्कान (रविग्राम, रायपुर),
अंकित (अम्पारा, रायपुर),
संदीप (लक्ष्मण नगर, रायपुर),
ऋद्धम (बस्सी पठाना),
विजयलक्ष्मी (तिलोई, अमेठी),
सिमरन (फगवाड़ा), तमन्ना (अम्बाला),
विधिता (बेंगलुरु), प्राची (फरीदाबाद),
अदिति (चरखारी, महोबा), गुंजल (पानीपत),
गौरव (लक्ष्मी नगर, रायपुर),
अंजलि, कृष्णा, प्रेरणा, नीव, अभय, मीत,
सोमजनी-साहिल, सोमजनी-ओम,
यशोहो (गोधरा)।

मई अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भरकर 20 मई तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 को भेज दें।

पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) **जुलाई अंक** में प्रकाशित किये जाएंगे।

चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।

15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

रंग भरो

नाम ..... आयु .....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड .....

आपके पत्र

हँसती दुनिया का फरवरी अंक पाकर मन प्रसन्न हो गया। 'कल करे सो आज कर, आज करे सो अब।' कहावत के अनुसार हँसती दुनिया कभी भी लेट नहीं होती बल्कि समय से पहले चलती है। जैसे कि 27 जनवरी को फरवरी अंक प्राप्त हो गया। ऐसे ही हर काम हमें समय अनुसार करना चाहिये। इससे बहुत अनुशासन रहता है व खुशी मिलती है।

प्रेरक-प्रसंग– 'एक लोटा पानी' (श्यामसुन्दर गर्ग) से हम शिक्षा ग्रहण करते हैं कि अगर हमें बड़ा बनना है तो हम अपनी वाणी व व्यवहार को मधुर और आर्कषक बनाये। अगर हम ऐसा करेंगे तो सब तरफ से प्यार व आदर मिलेगा। 'दादा जी' (चित्रकथा) में बड़े ही निराले ढंग से समझाया गया है कि घमंड का परिणाम अच्छा नहीं होता।

हँसती दुनिया हँस कर व खेल-खेल में बहुत बड़ी शिक्षा दे जाती है।

हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि यह दिन-प्रतिदिन और ऊँचाईयों को छूती जाये।

– अमिता मोहन (भटिंडा)

मैंने अपने दोस्त के घर हँसती दुनिया को पढ़ा और इसके बारे में जानकारी प्राप्त की। मेरे दोस्त ने बताया कि ये (हँसती दुनिया) ज्ञान सरोवर है और इसे पढ़कर बहुत अच्छा लगा।

– मुकेश कुमार (मौहाभाठा)

बाल कविता
'मदर्स डे' 14 मई पर विशेष

माँ

ईश्वर का वरदान है माँ,
होती ममता की खान है माँ।
माँ बच्चों की जन्मदाता,
माँ बच्चों की भाग्य विधाता।
माँ बचपन से हम को पाले,
लेकिन हम न उसे सम्भालें।
सब माँ का सम्मान करें,
कभी नहीं अपमान करें।
माँ के चरणों में तीर्थ है,
माँ पूजा न जाये व्यर्थ है।
माँ के हम पे कर्ज हजार,
कभी न सकते उन्हें उतार।
माँ से बढ़कर और न दूजा,
करनी है बस माँ की पूजा।
माँ का ही अधिकार है हम पर,
खूब बरसता प्यार है हम पर।
माँ के कदमों में है जन्नत,
पूरी करती है हर मन्नत।
माँ से हम सब प्यार करें,
'चमन' सदा सत्कार करें।

– प्रस्तुति : जगतार 'चमन'

वर्ग पहेली के उत्तर

1 अ	प्रै	2 ल	■	3 सू	जा	4 न
ध	■	ड़	■	री	■	फ
5 म	6 नो	का	7 म	ना	■	र
■	ब	■	8 हि	म	9 पा	त
10 ला	ल	11 कि	ला	■	नी	■
ओ	■	सा	■	12 गौ	र	13 व
14 स	15 ह	न	शी	ल	■	या
■	रा	■	■	16 म	द	न

kids Nirankari
spiritual dreamland for kids

Spiritual Zone for kids

With the blessings of His Holiness
Experience online spiritual learning
with exciting and fun features
highlights our mission's message.
Visit regularly to watch tiny tots
excelling in the spiritual journey.

kids.nirankari.org

- His Holiness Message
- Glimpse of Blessing
- Message in colors
- Poetry Fantasy
- Wacky and True
- Fun Games
- Hansti Duniya
- Kids Creation
- Kids Activities
- Jokes
- Avtar Vani
- Story Time

Share
your talent
in form of
painting, poetry
& story

Registered with the Registrar of Newspaper For India Under RNI No. 25672/73 : : :

Delhi Postal Regd. No. G-3/DL(N)/136/2018-20
Licence No. U (DN)-23/2018-20
Licenced to post without Pre-payment

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ें और पढ़ाएं!

हँसती दुनिया	सन्त निरंकारी	एक नज़र
(चार भाषाओं में)	(ग्यारह भाषाओं में)	(तीन भाषाओं में)

'सन्त निरंकारी', 'हँसती दुनिया' (हिन्दी, पंजाबी व अंग्रेजी) एवं 'एक नज़र' (हिन्दी/पंजाबी) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009

Ph. 011–47660200, E-mail : patrika@nirankari.org

सन्त निरंकारी, हँसती दुनिया, एक नज़र (मराठी) व सन्त निरंकारी (नेपाली) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

Sant Nirankari Satsang Bhawan

1st Floor, 50, Morbag Road, Naigaon, Dadar (E) MUMBAI - 400 014 (Mah.)

e-mail : chandunirankari@yahoo.com & marathi@nirankari.org

अन्य भाषाओं की पत्रिकाओं की सदस्यता के लिए निम्नानुसार सम्पर्क करें

TAMIL

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
#7, Govindan Street,
Ayavoo Naidu Colony, Aminji Karai,
CHENNAI-600 029 (T.N.)
Ph. 044-23740830

ORIYA

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
Kazidiha, Post : Madhupatna,
CUTTACK-753 010 (Orissa)
Ph. 0671-2341250

TELUGU

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
No. 6-2-970, Khairtabad,
HYDERABAD- Pin : 500 029 (TS)
Ph. 040-23317679

GUJRATI

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
1st Floor, 50, Morbag Road,
Naigaon, Dadar (E)
MUMBAI - 400 014 (Mah.)
Ph. 22-24102047

KANNADA

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
88, Rattanvillas Road,
Southend Circle, Basavangudi,
BENGALURU-560 023 (Karnataka)
Ph. 080-26577212

BANGLA

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
884,G.T. Road, Laxmipur-2
East Bardhman—713101
Ph. 0342-2657219

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें

Posted at NDPSO, Prescribed dates 21th & 22nd., Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)